

**Time Allowed :3 Hours | Maximum Marks :100 | Total Questions :14**

### General Instructions

**Read the following instructions very carefully and strictly follow them:**

1. प्रारंभ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं।
2. इस प्रश्न-पत्र में दो खंड हैं। दोनों खंडों के सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

### खण्ड - 'क'

1. क) 'रानी केतकी की कहानी' के लेखक हैं

- (i) मुंशी सदासुखलाल
- (ii) इंशा अल्ला खाँ
- (iii) बैकुंठमणि शुक्ल
- (iv) गोकुलनाथ

**Correct Answer:** (ii) इंशा अल्ला खाँ

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Concept:**

यह प्रश्न हिन्दी गद्य के प्रारंभिक काल की एक महत्वपूर्ण रचना के लेखक के बारे में है।

This question is about the author of an important work from the early period of Hindi prose.

**Step 2: Detailed Explanation:**

'रानी केतकी की कहानी' की रचना इंशा अल्ला खाँ ने लगभग 1803 ई. में की थी। इसे खड़ी बोली गद्य की पहली मौलिक कहानी माना जाता है। इसकी भाषा में अरबी-फ़ारसी का प्रभाव कम और हिन्दी का ज्यादा प्रभाव देखने को मिलता है। मुंशी सदासुखलाल भी प्रारंभिक गद्य लेखकों में से एक हैं, जिनकी रचना 'सुखसागर' है।

'Rani Ketki ki Kahani' was written by Insha Allah Khan around 1803 AD. It is considered the first original story in Khari Boli prose. Its language shows less influence of Arabic-Persian and more of Hindi. Munshi Sadhasukhlal is also one of the early prose writers, whose work is 'Sukhsagar'.

**Step 3: Final Answer:**

अतः, सही उत्तर इंशा अल्ला खाँ है।

Thus, the correct answer is Insha Allah Khan.

## Quick Tip

हिन्दी गद्य के चार प्रारंभिक स्तंभों को याद रखें: इंशा अल्ला खाँ ('रानी केतकी की कहानी'), सदल मिश्र ('नासिकेतोपाख्यान'), लल्लू लाल ('प्रेम सागर'), और मुंशी सदासुखलाल ('सुख-सागर')। Remember the four pillars of early Hindi prose: Insha Allah Khan ('Rani Ketki ki Kahani'), Sadal Mishra ('Nasiketopakhyan'), Lallu Lal ('Prem Sagar'), and Munshi Sadhasukhlal ('Sukhsagar').

1. ख) 'यदि गद्य कवियों की कसौटी है तो निबन्ध गद्य की कसौटी है।' यह कथन किस साहित्यकार का है ?

- (i) प्रतापनारायण मिश्र
- (ii) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- (iii) महावीरप्रसाद द्विवेदी
- (iv) अम्बिकादत्त व्यास

**Correct Answer:** (ii) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Concept:**

यह प्रश्न हिन्दी साहित्य के एक प्रसिद्ध आलोचक के एक महत्वपूर्ण कथन के बारे में है। This question is about an important quote from a famous critic of Hindi literature.

**Step 2: Detailed Explanation:**

यह प्रसिद्ध कथन हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ आलोचक, निबंधकार और साहित्य-इतिहासकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का है। अपने निबंध 'चिंतामणि' में उन्होंने इस कथन के माध्यम से यह स्थापित किया कि निबंध लेखन गद्य की सबसे उत्कृष्ट और कठिन विधा है। जिस प्रकार गद्य लेखन कवियों की परीक्षा लेता है, उसी प्रकार निबंध लेखन गद्यकारों की क्षमता की असली कसौटी है।

This famous statement belongs to the greatest critic, essayist, and literary historian of Hindi, Acharya Ramchandra Shukla. In his collection of essays 'Chintamani', he established through this statement that essay writing is the most excellent and difficult genre of prose. Just as prose writing tests poets, essay writing is the true test of a prose writer's ability.

**Step 3: Final Answer:**

यह कथन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का है।

This statement is by Acharya Ramchandra Shukla.

### Quick Tip

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल को हिन्दी में आलोचना का सम्राट माना जाता है। गद्य, विशेषकर निबंध, के बारे में गहन और मौलिक विचार अक्सर उन्हीं से संबंधित होते हैं। Acharya Ramchandra Shukla is considered the emperor of criticism in Hindi. Profound and original thoughts about prose, especially essays, are often associated with him.

## 1. ग) 'पद्मावत की संजीवनी व्याख्या' ग्रंथ में गद्य की विधा है

- (i) नाटक
- (ii) कहानी
- (iii) उपन्यास
- (iv) आलोचना

**Correct Answer:** (iv) आलोचना

### Solution:

#### Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न एक साहित्यिक कृति के गद्य-रूप या विधा को पहचानने के बारे में है।  
This question is about identifying the prose genre of a literary work.

#### Step 2: Detailed Explanation:

'पद्मावत की संजीवनी व्याख्या' के लेखक वासुदेवशरण अग्रवाल हैं। शीर्षक में 'व्याख्या' शब्द का अर्थ है 'विवेचना' या 'टीका' (interpretation or commentary)। जब किसी साहित्यिक कृति की विस्तृत विवेचना, विश्लेषण और मूल्यांकन किया जाता है, तो वह गद्य की 'आलोचना' विधा के अंतर्गत आता है। इस ग्रंथ में मलिक मुहम्मद जायसी के महाकाव्य 'पद्मावत' का गहन विश्लेषण किया गया है।  
The author of 'Padmavat ki Sanjivani Vyakhya' is Vasudev Sharan Agrawal. The word 'Vyakhya' in the title means 'interpretation' or 'commentary'. When a detailed interpretation, analysis, and evaluation of a literary work is done, it falls under the genre of 'criticism' (आलोचना). This book provides an in-depth analysis of Malik Muhammad Jayasi's epic 'Padmavat'.

#### Step 3: Final Answer:

इस ग्रंथ की विधा आलोचना है।  
The genre of this work is criticism.

### Quick Tip

किसी कृति के शीर्षक में 'व्याख्या', 'टीका', 'विश्लेषण', या 'मीमांसा' जैसे शब्द आएँ, तो वह सामान्यतः 'आलोचना' विधा की रचना होती है। If words like 'Vyakhya' (interpretation), 'Tika' (commentary), 'Vishleshan' (analysis), or 'Mimansa' (exegesis) appear in the title of a work, it is generally a work of the 'criticism' genre.

---

1. घ) तेलुगू भाषी तमिल, कन्नड़ और मलयालम साहित्य सृजन के साथ हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ निबन्धकार हैं

- (i) डॉ० अब्दुल कलाम
- (ii) प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी
- (iii) जैनेन्द्र कुमार
- (iv) राम कुमार वर्मा

**Correct Answer:** (ii) प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Concept:**

यह प्रश्न एक ऐसे साहित्यकार के बारे में है जो मूलतः हिन्दी भाषी न होते हुए भी हिन्दी साहित्य में, विशेषकर निबंध लेखन में, महत्वपूर्ण योगदान के लिए जाने जाते हैं।

This question is about a literary figure who, despite not being a native Hindi speaker, is known for his significant contribution to Hindi literature, especially in essay writing.

**Step 2: Detailed Explanation:**

प्रोफेसर जी. सुन्दर रेड्डी एक प्रख्यात विचारक, समालोचक और निबंधकार थे। उनकी मातृभाषा तेलुगू थी, लेकिन उन्होंने हिन्दी में भी उत्कृष्ट लेखन कार्य किया। उनके निबंधों के विषय अक्सर भाषा, संस्कृति, राष्ट्रीय एकता और दक्षिण भारतीय साहित्य से संबंधित होते थे। वे अहिंदी भाषी क्षेत्रों से हिन्दी साहित्य में योगदान देने वाले प्रमुख लेखकों में से एक हैं।

Professor G. Sundar Reddy was a renowned thinker, critic, and essayist. His mother tongue was Telugu, but he also did excellent writing in Hindi. The subjects of his essays were often related to language, culture, national unity, and South Indian literature. He is one of the prominent writers from non-Hindi speaking regions who contributed to Hindi literature.

**Step 3: Final Answer:**

प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी सही उत्तर हैं।

Prof. G. Sundar Reddy is the correct answer.

#### Quick Tip

जब प्रश्न में किसी अहिंदी भाषी, विशेषकर दक्षिण भारतीय, लेखक के हिन्दी साहित्य में योगदान का उल्लेख हो, तो प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी एक प्रमुख और संभावित उत्तर होते हैं। When a question mentions the contribution of a non-Hindi speaking writer, especially from South India, to Hindi literature, Prof. G. Sundar Reddy is a prominent and likely answer.

---

1. ड) डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी निम्न में से किस उपन्यास के रचनाकार नहीं हैं ?

- (i) गबन
- (ii) पुनर्नवा
- (iii) अनामदास का पोथा
- (iv) बाणभट्ट की आत्मकथा

**Correct Answer:** (i) गबन

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Concept:**

यह प्रश्न हिन्दी के एक प्रमुख उपन्यासकार की रचनाओं की पहचान करने पर आधारित है। प्रश्न में पूछा गया है कि कौन-सा उपन्यास डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी का नहीं है।

This question is based on identifying the works of a major Hindi novelist. The question asks which novel is NOT written by Dr. Hazariprasad Dwivedi.

**Step 2: Detailed Explanation:**

'पुनर्नवा', 'अनामदास का पोथा' और 'बाणभट्ट की आत्मकथा' – ये तीनों ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित प्रसिद्ध उपन्यास डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखे गए हैं। 'चारु चंद्रलेख' भी उनका एक अन्य प्रमुख उपन्यास है।

'Punarva', 'Anamdas ka Potha', and 'Banbhatt ki Atmakatha' are all famous novels based on historical backgrounds written by Dr. Hazariprasad Dwivedi. 'Charu Chandralekh' is another major novel by him.

दूसरी ओर, 'गबन' उपन्यास के लेखक उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द हैं। 'गबन' मध्यमवर्गीय समाज के दिखावे और नैतिक पतन की कहानी कहता है।

On the other hand, the author of the novel 'Gaban' is the emperor of novels, Munshi Premchand. 'Gaban' tells the story of the pretentiousness and moral decline of middle-class society.

**Step 3: Final Answer:**

अतः, 'गबन' के रचनाकार डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी नहीं हैं।

Therefore, the author of 'Gaban' is not Dr. Hazariprasad Dwivedi.

**Quick Tip**

हिन्दी के प्रमुख उपन्यासकारों जैसे प्रेमचन्द, हजारीप्रसाद द्विवेदी, जैनेन्द्र कुमार, और फणीश्वरनाथ 'रेणु' की 2-3 प्रमुख रचनाओं को याद रखना बहुत महत्वपूर्ण है। It is very important to remember 2-3 major works of prominent Hindi novelists like Premchand, Hazariprasad Dwivedi, Jainendra Kumar, and Phanishwarnath 'Renu'.

2. क) हिन्दी काव्य साहित्य के किस युग को 'जागरण सुधार काल' कहा जाता है ?

- (i) भारतेन्दु-युग
- (ii) द्विवेदी-युग

- (iii) छायावाद युग
- (iv) प्रगतिवाद युग

**Correct Answer:** (ii) द्विवेदी-युग

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Concept:**

यह प्रश्न हिन्दी काव्य साहित्य के एक विशेष युग को उसकी प्रमुख विशेषताओं के आधार पर दिए गए नाम से संबंधित है।

This question relates to the name given to a specific era of Hindi poetry based on its main characteristics.

**Step 2: Detailed Explanation:**

द्विवेदी युग (लगभग 1900-1920) को 'जागरण सुधार काल' (Era of Awakening and Reform) के नाम से जाना जाता है। इस युग के पथ-प्रदर्शक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी थे। उन्होंने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से हिन्दी भाषा का परिष्कार, मानकीकरण और सुधार किया। इस काल की कविता में सामाजिक कुरीतियों का विरोध, नैतिकता, आदर्शवाद और राष्ट्रीय चेतना जैसे विषयों पर जोर दिया गया, इसलिए इसे 'जागरण' और 'सुधार' का काल कहा जाता है।

The Dwivedi Yug (circa 1900-1920) is known as the 'Jagran Sudhar Kaal' (Era of Awakening and Reform). The pioneer of this era was Acharya Mahavir Prasad Dwivedi. Through the magazine 'Saraswati', he refined, standardized, and reformed the Hindi language. The poetry of this period emphasized themes like opposition to social evils, morality, idealism, and national consciousness, which is why it is called the era of 'awakening' and 'reform'.

**Step 3: Final Answer:**

द्विवेदी-युग को 'जागरण सुधार काल' कहा जाता है।

The Dwivedi Yug is called the 'Jagran Sudhar Kaal'.

**Quick Tip**

हिन्दी साहित्य के युगों के उपनाम याद रखें: भारतेन्दु युग - पुनर्जागरण काल, द्विवेदी युग - जागरण सुधार काल, छायावाद - स्वच्छंदतावाद/रोमांटिक युग। Remember the alternative names for the eras of Hindi literature: Bharatendu Yug - Renaissance Era, Dwivedi Yug - Awakening and Reform Era, Chhayavaad - Romanticism Era.

2. ख) 'परशुराम की प्रतीक्षा' के रचनाकार हैं

- (i) मैथिलीशरण गुप्त
- (ii) जयशंकर प्रसाद
- (iii) रामधारी सिंह 'दिनकर'
- (iv) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

**Correct Answer:** (iii) रामधारी सिंह 'दिनकर'

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Concept:**

यह प्रश्न एक प्रसिद्ध काव्य रचना के रचयिता की पहचान से संबंधित है।

This question is related to identifying the author of a famous poetic work.

**Step 2: Detailed Explanation:**

'परशुराम की प्रतीक्षा' एक ओजस्वी काव्य रचना है जिसके रचयिता राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। यह काव्य 1962 के भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि में लिखा गया था। इसमें कवि ने पौराणिक पात्र परशुराम के माध्यम से देश के स्वाभिमान और पौरुष को जगाने का आह्वान किया है। दिनकर जी अपनी वीर रस से भरी राष्ट्रीय कविताओं के लिए विख्यात हैं, जैसे 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी' और 'हुंकार'।

'Parshuram ki Pratiksha' is a powerful poetic work whose creator is the national poet Ramdhari Singh 'Dinkar'. This poem was written in the backdrop of the 1962 Indo-China war. In it, the poet invokes the mythological character Parshuram to awaken the nation's self-respect and valor. Dinkar is renowned for his nationalistic poems full of heroic sentiment (Veer Ras), such as 'Kuruksheetra', 'Rashmirathi', and 'Hunkar'.

**Step 3: Final Answer:**

इस रचना के रचनाकार रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं।

The creator of this work is Ramdhari Singh 'Dinkar'.

#### Quick Tip

रामधारी सिंह 'दिनकर' को 'अनल कवि' (कवि आग) भी कहा जाता है। उनकी रचनाओं में अक्सर वीरता, विद्रोह और क्रांति का स्वर मिलता है। 'परशुराम की प्रतीक्षा' जैसे शीर्षक उनकी शैली से मेल खाते हैं। Ramdhari Singh 'Dinkar' is also called 'Anal Kavi' (the poet of fire). A tone of heroism, rebellion, and revolution is often found in his works. Titles like 'Parshuram ki Pratiksha' match his style.

2. ग) 'झाँसी की रानी' कविता किसकी रचना है ?

- (i) मैथिलीशरण गुप्त
- (ii) सुभद्रा कुमारी चौहान
- (iii) श्याम नारायण पाण्डेय
- (iv) सोहन लाल द्विवेदी

**Correct Answer:** (ii) सुभद्रा कुमारी चौहान

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Concept:**

यह प्रश्न हिन्दी की एक अत्यंत लोकप्रिय और प्रसिद्ध कविता के रचयिता के बारे में है।

This question is about the author of an extremely popular and famous Hindi poem.

**Step 2: Detailed Explanation:**

'झाँसी की रानी' कविता सुभद्रा कुमारी चौहान की सबसे प्रसिद्ध रचना है। इसकी पंक्तियाँ "बुंदेले हर-बोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी" घर-घर में लोकप्रिय हैं। यह कविता वीर रस का उत्कृष्ट उदाहरण है और राष्ट्रीय चेतना जगाने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी कविताओं के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया।

The poem 'Jhansi ki Rani' is the most famous work of Subhadra Kumari Chauhan. Its lines "Bundele harbolon ke munh hamne suni kahani thi, khoob ladi mardani woh toh Jhansi wali rani thi" are popular in every household. This poem is an excellent example of heroic sentiment (Veer Ras) and has played a significant role in awakening national consciousness. Subhadra Kumari Chauhan participated in the freedom struggle through her poems.

**Step 3: Final Answer:**

यह कविता सुभद्रा कुमारी चौहान की रचना है।

This poem is a composition of Subhadra Kumari Chauhan.

**Quick Tip**

"खूब लड़ी मर्दानी" पंक्ति को हमेशा सुभद्रा कुमारी चौहान से जोड़ें। यह हिन्दी साहित्य की सबसे प्रसिद्ध पंक्तियों में से एक है। Always associate the line "Khoob ladi mardani" with Subhadra Kumari Chauhan. It is one of the most famous lines in Hindi literature.

**2. घ) 'छायावाद' के कवि हैं**

- (i) रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'
- (ii) गजानन माधव मुक्तिबोध
- (iii) भवानी प्रसाद मिश्र
- (iv) महादेवी वर्मा

**Correct Answer:** (iv) महादेवी वर्मा

**Solution:****Step 1: Understanding the Concept:**

यह प्रश्न हिन्दी काव्य के 'छायावाद' युग के प्रमुख कवियों की पहचान से संबंधित है।

This question is related to the identification of the major poets of the 'Chhayavaad' era of Hindi poetry.

**Step 2: Detailed Explanation:**

छायावाद (लगभग 1920-1936) हिन्दी साहित्य का एक प्रमुख युग है। इसके चार मुख्य आधार स्तंभ

माने जाते हैं - जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानन्दन पन्त और महादेवी वर्मा। महादेवी वर्मा को 'आधुनिक युग की मीरा' भी कहा जाता है। उनकी कविताओं में वेदना और रहस्यवाद की प्रधानता है। दिए गए अन्य कवि (मुक्तिबोध, भवानी प्रसाद मिश्र) प्रयोगवाद और नई कविता के दौर के हैं।

Chhayavaad (circa 1920-1936) is a major era in Hindi literature. It is considered to have four main pillars - Jaishankar Prasad, Suryakant Tripathi 'Nirala', Sumitranandan Pant, and Mahadevi Varma. Mahadevi Varma is also known as the 'Meera of the modern era'. Her poetry is predominated by themes of pain and mysticism. The other poets mentioned (Muktibodh, Bhawani Prasad Mishra) belong to the era of Prayogvaad and Nayi Kavita (New Poetry).

### Step 3: Final Answer:

महादेवी वर्मा छायावाद की कवयित्री हैं।

Mahadevi Varma is a poetess of the Chhayavaad era.

#### Quick Tip

छायावाद के चार स्तंभों - प्रसाद, पन्त, निराला और महादेवी - के नाम अवश्य याद रखें। अधिकांश छायावाद संबंधी प्रश्न इन्हीं के इर्द-गिर्द होते हैं। Definitely remember the names of the four pillars of Chhayavaad - Prasad, Pant, Nirala, and Mahadevi. Most questions related to Chhayavaad revolve around them.

2. ड) 'प्रकृति के सुकुमार कवि' किसे कहा जाता है ?

- (i) महादेवी वर्मा
- (ii) शकुन्तला माथुर
- (iii) सुमित्रानन्दन पन्त
- (iv) जगन्नाथ दास 'रत्नाकर'

**Correct Answer:** (iii) सुमित्रानन्दन पन्त

**Solution:**

#### Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न हिन्दी साहित्य में एक प्रसिद्ध कवि को दी गई उपाधि या विशेषण के बारे में है।

This question is about a title or epithet given to a famous poet in Hindi literature.

#### Step 2: Detailed Explanation:

सुमित्रानन्दन पन्त, जो छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं, को 'प्रकृति के सुकुमार कवि' (The gentle poet of nature) कहा जाता है। इसका कारण यह है कि उन्होंने अपनी कविताओं में प्रकृति का अत्यंत कोमल, सजीव और मनोरम चित्रण किया है। प्रकृति उनके लिए केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि एक जीवित सत्ता थी। उनकी प्रारंभिक रचनाओं में प्रकृति प्रेम सर्वोपरि है।

Sumitranandan Pant, one of the four main pillars of Chhayavaad, is called 'Prakriti ke Sukumar

Kavi' (The gentle poet of nature). The reason for this is that he depicted nature in his poems in an extremely delicate, lively, and beautiful manner. For him, nature was not just a backdrop but a living entity. Love for nature is paramount in his early works.

**Step 3: Final Answer:**

सुमित्रानन्दन पन्त को 'प्रकृति के सुकुमार कवि' कहा जाता है।  
Sumitranandan Pant is called 'the gentle poet of nature'.

**Quick Tip**

कवियों की उपाधियाँ याद रखें: सुमित्रानन्दन पन्त - प्रकृति के सुकुमार कवि, महादेवी वर्मा - आधुनिक युग की मीरा, रामधारी सिंह 'दिनकर' - राष्ट्रकवि/अनल कवि। Remember the epithets of poets: Sumitranandan Pant - Prakriti ke Sukumar Kavi, Mahadevi Varma - Adhunik Yug ki Meera, Ramdhari Singh 'Dinkar' - Rashtrakavi/Anal Kavi.

**3. दिये गये गद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

गद्यांश 1: मुझे मानव-जाति की दुर्दम-निर्मम धारा के हजारों वर्ष का रूप साफ दिखायी दे रहा है। मनुष्य की जीवनी-शक्ति बड़ी निर्मम है, वह सभ्यता और संस्कृति के वृथा मोहों को रौंदती चली आ रही है। न जाने कितने धर्माचारों, विश्वासों, उत्सवों और व्रतों को धोती-बहाती यह जीवन-धारा आगे बढ़ी है। संघर्षों से मनुष्य ने नयी शक्ति पायी है। हमारे सामने समाज का आज जो रूप है, वह न जाने कितने ग्रहण और त्याग का रूप है। देश और जाति की विशुद्ध संस्कृति केवल बाद की बात है।

3. i) प्रस्तुत गद्यांश 'मुझे मानव-जाति...' के पाठ का शीर्षक एवं लेखक के नाम का उल्लेख कीजिए।

**Correct Answer:** पाठ का शीर्षक - 'अशोक के फूल', लेखक का नाम - आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी।

**Solution:**

**Step 1: Identifying the Context:**

यह गद्यांश हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध ललित निबंध 'अशोक के फूल' से लिया गया है।

This passage is taken from the famous literary essay 'Ashok ke Phool' in Hindi literature.

**Step 2: Identifying the Author:**

इस निबंध के लेखक प्रख्यात निबंधकार, आलोचक और उपन्यासकार आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी हैं।

The author of this essay is the renowned essayist, critic, and novelist Acharya Hazariprasad Dwivedi.

**Step 3: Final Answer:**

अतः, प्रस्तुत गद्यांश के पाठ का शीर्षक 'अशोक के फूल' और लेखक का नाम 'आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी' है।

Therefore, the title of the lesson of the given passage is 'Ashok ke Phool' and the author's name

is 'Acharya Hazariprasad Dwivedi'.

### Quick Tip

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की भाषा संस्कृतनिष्ठ और विचार-प्रधान होती है। जब गद्यांश में संस्कृति, इतिहास और मानव सभ्यता के विकास पर गहन चिंतन दिखे, तो यह उनकी शैली का संकेत हो सकता है। The language of Acharya Hazariprasad Dwivedi is Sanskritized and thought-provoking. When a passage shows deep reflection on culture, history, and the development of human civilization, it can be an indicator of his style.

3. ii) रेखांकित अंश "संघर्षों से मनुष्य ने नयी शक्ति पायी है।" की व्याख्या कीजिए।

**Correct Answer:** लेखक के अनुसार, मानव जाति ने अपने विकास के क्रम में निरंतर आने वाली चुनौतियों और कठिनाइयों का सामना करके ही नई ऊर्जा, क्षमता और जिजीविषा प्राप्त की है। संघर्ष ही प्रगति का मूल है।

**Solution:**

#### Step 1: Understanding the Context:

यह पंक्ति मानव सभ्यता के विकास के संदर्भ में कही गई है। लेखक यह बता रहे हैं कि मानव का इतिहास सुख-सुविधाओं का नहीं, बल्कि निरंतर संघर्षों का रहा है।

This line is said in the context of the development of human civilization. The author is stating that human history has not been one of comfort but of continuous struggles.

#### Step 2: Detailed Explanation:

इस पंक्ति में लेखक का आशय है कि मनुष्य ने अपने अस्तित्व को बनाए रखने और आगे बढ़ने के लिए हमेशा प्रकृति, परिस्थितियों और अन्य शक्तियों से संघर्ष किया है। यह संघर्ष ही उसकी प्रगति का प्रेरक रहा है। हर चुनौती और हर कठिनाई ने मनुष्य को पहले से अधिक मजबूत, बुद्धिमान और सक्षम बनाया है। अतः, जीवन में मिली नई शक्ति किसी वरदान का परिणाम नहीं, बल्कि अनगिनत संघर्षों का फल है।

In this line, the author means that man has always struggled with nature, circumstances, and other forces to maintain his existence and move forward. This struggle has been the motivation for his progress. Every challenge and every difficulty has made man stronger, wiser, and more capable than before. Therefore, the new strength gained in life is not the result of a boon, but the fruit of countless struggles.

### Quick Tip

व्याख्या करते समय, पंक्ति के शाब्दिक अर्थ के साथ-साथ उसके गहरे, दार्शनिक भाव को भी स्पष्ट करें। यहाँ 'शक्ति' का अर्थ केवल शारीरिक बल नहीं, बल्कि बौद्धिक, मानसिक और सामाजिक क्षमता भी है। When explaining, clarify the deeper, philosophical meaning along with the literal meaning of the line. Here, 'shakti' (power/strength) does not just mean physical strength but also intellectual, mental, and social capability.

### 3. iii) मनुष्य ने नयी शक्ति किससे पायी है ?

**Correct Answer:** मनुष्य ने नयी शक्ति संघर्षों से पायी है।

**Solution:**

#### Step 1: Locating the Answer in the Passage:

गद्यांश में एक स्पष्ट पंक्ति दी गई है जो सीधे इस प्रश्न का उत्तर देती है।  
A clear line is given in the passage that directly answers this question.

#### Step 2: Quoting the Evidence:

गद्यांश में लिखा है : "संघर्षों से मनुष्य ने नयी शक्ति पायी है।"  
The passage states: "Through struggles, man has found new strength."

#### Step 3: Final Answer:

इस आधार पर, यह स्पष्ट है कि मनुष्य ने नयी शक्ति संघर्षों से पायी है।  
Based on this, it is clear that man has gained new strength from struggles.

### Quick Tip

कुछ प्रश्न सीधे गद्यांश की पंक्तियों पर आधारित होते हैं। उत्तर लिखने से पहले गद्यांश को फिर से पढ़ें और सटीक उत्तर वाली पंक्ति को पहचानें। Some questions are based directly on the lines of the passage. Reread the passage before writing the answer and identify the exact line that provides the answer.

### 3. iv) उपर्युक्त गद्यांश का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

**Correct Answer:** इस गद्यांश का उद्देश्य मानव-जीवन की निरंतरता, परिवर्तनशीलता और विकास में संघर्ष की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करना है, तथा यह बताना है कि शुद्ध संस्कृति जैसी कोई स्थिर चीज़ नहीं होती।

**Solution:**

**Step 1: Identifying the Central Theme:**

गद्यांश का केंद्रीय भाव मानव सभ्यता की 'दुर्दम-निर्मम धारा' यानी unstoppable and relentless flow है।

The central idea of the passage is the 'durdama-nirmam dhara' (unstoppable and relentless flow) of human civilization.

**Step 2: Explaining the Purpose:**

लेखक का उद्देश्य पाठकों को यह समझाना है कि मानव सभ्यता एक सतत प्रवाहमान नदी की तरह है, जो पुरानी और अनुपयोगी परंपराओं, विश्वासों और मोहों को पीछे छोड़ती हुई आगे बढ़ती है। इसका विकास संघर्षों से हुआ है। समाज का जो रूप आज हमें दिखता है, वह अनगिनत परिवर्तनों (ग्रहण और त्याग) का परिणाम है। लेखक यह भी संदेश देना चाहते हैं कि 'विशुद्ध संस्कृति' का विचार एक भ्रम है; संस्कृति हमेशा विभिन्न प्रभावों को ग्रहण करके ही विकसित होती है।

The author's purpose is to make readers understand that human civilization is like a continuously flowing river, which moves forward leaving behind old and useless traditions, beliefs, and attachments. Its development has occurred through struggles. The form of society we see today is the result of countless changes (adoptions and abandonments). The author also wants to convey that the idea of a 'pure culture' is an illusion; culture always evolves by absorbing various influences.

**Quick Tip**

गद्यांश का उद्देश्य या संदेश पहचानने के लिए, स्वयं से पूछें: "लेखक इस छोटे से हिस्से के माध्यम से क्या बड़ी बात कहना चाहता है?" To identify the purpose or message of a passage, ask yourself: "What is the main point the author is trying to make through this small excerpt?"

**3. v) 'धर्माचारों' और 'विश्वासों' के अर्थ लिखिए।**

**Correct Answer:** धर्माचारों : धर्म से जुड़े आचार-व्यवहार या रीति-रिवाज। विश्वासों : मान्यताएँ या आस्थाएँ।

**Solution:****Step 1: Defining 'धर्माचारों':**

धर्माचार शब्द 'धर्म' और 'आचार' से मिलकर बना है। इसका अर्थ है, धर्म के अनुसार किया जाने वाला आचरण, व्यवहार, कर्मकांड या रीति-रिवाज।

The word 'Dharmachar' is made up of 'Dharma' and 'Achar'. It means conduct, behavior, rituals, or customs performed according to religion.

**Step 2: Defining 'विश्वासों':**

विश्वास शब्द का अर्थ है आस्था, मान्यता, या यकीन। यह उन विचारों या अवधारणाओं को संदर्भित करता है जिन्हें एक व्यक्ति या समाज सच मानता है।

The word 'Vishwas' means faith, belief, or conviction. It refers to the ideas or concepts that a

person or society holds to be true.

### Quick Tip

शब्दों का अर्थ लिखते समय, उनके मूल रूप को समझने की कोशिश करें। 'धर्माचार' में 'आचार' (conduct) और 'विश्वास' में 'श्वास' (trust/life-breath) से जुड़े भाव हैं। When writing the meaning of words, try to understand their root form. 'Dharmachar' contains the sense of 'achar' (conduct), and 'Vishwas' has a sense related to 'shwas' (trust/life-breath).

3. (अथवा) दिये गये गद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

गद्यांश 2: कुछ लोग बड़े निर्दोष मिथ्यावादी होते हैं, वे आदतन प्रकृति के वशीभूत झूठ बोलते हैं। उनके मुख से निष्प्रयास, निष्प्रयोजन झूठ ही निकलता है। मेरे एक रिश्तेदार ऐसे हैं। वे अगर बम्बई जा रहे हैं और उनसे पूछें तो वे कहेंगे, "कलकत्ता जा रहा हूँ।" ठीक बात उनके मुँह से निकल ही नहीं सकती। 'क' भी बड़ा निर्दोष, सहज-स्वाभाविक मिथ्यावादी है।

3. i) उपर्युक्त गद्यांश 'कुछ लोग बड़े निर्दोष...' का सन्दर्भ लिखिए।

**Correct Answer:** प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित, प्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई द्वारा रचित व्यंग्यात्मक निबंध 'निन्दा रस' से लिया गया है।

**Solution:**

**Step 1: Identifying the Author and Title:**

यह गद्यांश अपनी विशिष्ट व्यंग्यात्मक शैली के कारण पहचाना जा सकता है। यह शैली हरिशंकर परसाई की विशेषता है। यह अंश उनके प्रसिद्ध निबंध 'निन्दा रस' से है।

This passage can be recognized by its unique satirical style, which is a characteristic of Harishankar Parsai. This excerpt is from his famous essay 'Ninda Ras'.

**Step 2: Writing the Context ('सन्दर्भ'):**

**सन्दर्भ:** प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्यपुस्तक के गद्य-खंड में संकलित तथा हिन्दी के श्रेष्ठ व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित 'निन्दा रस' नामक निबंध से उद्धृत है। इस अंश में लेखक ने उन लोगों पर व्यंग्य किया है जिन्हें बिना किसी कारण के झूठ बोलने की आदत होती है।

**Context:** The presented prose excerpt is quoted from the essay titled 'Ninda Ras', written by the great Hindi satirist Harishankar Parsai and included in the prose section of our textbook. In this part, the author satirizes people who have a habit of lying without any reason.

### Quick Tip

सन्दर्भ लिखते समय तीन बातें आवश्यक हैं: पाठ का शीर्षक, लेखक का नाम, और (यदि संभव हो तो) उस अंश का मुख्य विषय। Three things are essential when writing the context ('sandarbh'): the title of the lesson, the name of the author, and (if possible) the main theme of that excerpt.

3. ii) रेखांकित अंश "ठीक बात उनके मुँह से निकल ही नहीं सकती।" की व्याख्या कीजिए।

**Correct Answer:** लेखक का आशय है कि आदतन झूठ बोलने वाले लोगों के लिए झूठ बोलना इतना स्वाभाविक हो जाता है कि वे चाहकर भी कोई बात सीधी और सच्ची तरह से नहीं कह पाते। सच बोलना उनके स्वभाव के विरुद्ध हो जाता है।

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Satirical Tone:**

यह पंक्ति एक व्यंग्य है, जो आदतन झूठ बोलने वालों की लाचारी को दर्शाती है।

This line is a satire, depicting the helplessness of habitual liars.

**Step 2: Detailed Explanation:**

इस रेखांकित अंश में लेखक यह कहना चाहते हैं कि कुछ लोगों के लिए झूठ बोलना उनकी प्रकृति का हिस्सा बन जाता है। यह आदत इतनी गहरी हो जाती है कि उनके लिए सच बोलना लगभग असंभव हो जाता है। वे किसी भी प्रश्न का सीधा या सच्चा उत्तर नहीं दे सकते; उनकी पहली प्रतिक्रिया हमेशा झूठ बोलने की ही होती है, भले ही उसमें उनका कोई फायदा न हो। लेखक के अनुसार, ऐसे लोगों के मुँह से 'ठीक बात' यानी सत्य का निकलना उतना ही मुश्किल है जितना किसी अन्य प्राकृतिक नियम का बदलना।

In this underlined part, the author wants to say that for some people, lying becomes a part of their nature. This habit becomes so ingrained that it is almost impossible for them to speak the truth. They cannot give a direct or true answer to any question; their first reaction is always to lie, even if there is no benefit in it for them. According to the author, for the 'right thing' i.e., truth, to come out of such people's mouths is as difficult as changing any other law of nature.

### Quick Tip

हरिश्चंकर परसाई के गद्यांशों की व्याख्या करते समय, उनकी व्यंग्यात्मक शैली को उजागर करना महत्वपूर्ण है। सामान्य शब्दों के पीछे छिपे तीखे कटाक्ष को स्पष्ट करें। When explaining excerpts from Harishankar Parsai, it is important to highlight his satirical style. Clarify the sharp sarcasm hidden behind ordinary words.

3. iii) लेखक अपने विरोधियों की निन्दा सुनकर किस प्रकार आनन्दित होता है ?

**Correct Answer:** पाठ के अनुसार, लेखक को मित्रों द्वारा अपने विरोधियों की निंदा सुनकर ऐसा आनंद मिलता है मानो उसे अमृत पिलाया जा रहा हो और उसकी भुजाओं में नई शक्ति आ गई हो।

**Solution:**

**Step 1: Clarifying the Scope of the Question:**

यह प्रश्न दिए गए गद्यांश से नहीं, बल्कि पूरे 'निन्दा रस' पाठ के आधार पर है। गद्यांश में इसका उल्लेख नहीं है।

This question is not from the given passage, but is based on the entire 'Ninda Ras' lesson. It is not mentioned in the excerpt.

**Step 2: Answering based on the Complete Text:**

अपने निबंध 'निन्दा रस' में, लेखक हरिशंकर परसाई व्यंग्य करते हुए बताते हैं कि जब उनके कुछ 'निंदक' मित्र उनके पास आकर उनके शत्रुओं या विरोधियों की बुराई करते हैं, तो उन्हें असीम आनंद की अनुभूति होती है। वह इस आनंद की तुलना अमृतपान से करते हैं। उन्हें लगता है कि इस निंदा-रस को सुनकर उनका द्वेष शांत होता है और उन्हें एक आत्मिक संतुष्टि मिलती है। यह मानव मनोविज्ञान पर एक तीखा कटाक्ष है कि मनुष्य अपनी प्रशंसा से भी अधिक दूसरों की निंदा में आनंद खोजता है।

In his essay 'Ninda Ras', author Harishankar Parsai satirically explains that when some of his 'slanderer' friends come to him and speak ill of his enemies or opponents, he feels immense joy. He compares this joy to drinking nectar. He feels that listening to this 'juice of slander' pacifies his malice and gives him spiritual satisfaction. This is a sharp satire on human psychology that man finds more pleasure in the slander of others than in his own praise.

#### Quick Tip

परीक्षा में ध्यान दें कि क्या प्रश्न केवल दिए गए 'गद्यांश' पर आधारित है या पूरे 'पाठ' पर। यदि गद्यांश में उत्तर न मिले तो यह संकेत है कि यह एक पाठ-आधारित प्रश्न है। In an exam, pay attention to whether the question is based only on the given 'passage' or on the entire 'lesson'. If the answer is not found in the passage, it is an indication that it is a lesson-based question.

3. iv) निर्दोष मिथ्यावादी लोग कौन होते हैं ?

**Correct Answer:** गद्यांश के अनुसार, निर्दोष मिथ्यावादी वे लोग होते हैं जो बिना किसी विशेष कारण, उद्देश्य या लाभ के, केवल अपनी आदत और स्वभाव के कारण झूठ बोलते हैं।

**Solution:**

**Step 1: Analyzing the Term 'निर्दोष मिथ्यावादी':**

यह शब्द दो भागों से बना है : 'निर्दोष' (innocent/harmless) और 'मिथ्यावादी' (liar)।

This term is made of two parts: 'nirdosh' (innocent/harmless) and 'mithyavadi' (liar).

## Step 2: Extracting the Definition from the Passage:

गद्यांश में लेखक स्पष्ट करते हैं कि ये वे लोग हैं जो "आदतन प्रकृति के वशीभूत झूठ बोलते हैं।" उनके झूठ "निष्प्रयास" (effortless) और "निष्प्रयोजन" (purposeless) होते हैं। इसका अर्थ है कि वे किसी को धोखा देने या कोई लाभ उठाने के लिए झूठ नहीं बोलते, बल्कि झूठ बोलना उनकी आदत बन चुका है। इसलिए लेखक उन्हें 'निर्दोष' कहते हैं, क्योंकि उनके झूठ के पीछे कोई दुर्भावना नहीं होती।

In the passage, the author clarifies that these are people who "tell lies under the influence of their habitual nature." Their lies are "nishprayas" (effortless) and "nishprayojan" (purposeless). This means they do not lie to deceive someone or to gain an advantage, but lying has become their habit. That is why the author calls them 'nirdosh' (innocent), because there is no malicious intent behind their lies.

### Quick Tip

किसी वाक्यांश का अर्थ समझने के लिए, गद्यांश में दिए गए उदाहरणों पर ध्यान दें। यहाँ लेखक के रिश्तेदार का उदाहरण 'निर्दोष मिथ्यावादी' के अर्थ को पूरी तरह स्पष्ट कर देता है। To understand the meaning of a phrase, pay attention to the examples given in the passage. Here, the example of the author's relative perfectly clarifies the meaning of 'nirdosh mithyavadi'.

3. v) 'स्वाभाविक' एवं 'निर्दोष' में क्रमशः प्रत्यय एवं उपसर्ग छाँटकर लिखिए।

**Correct Answer:** 'स्वाभाविक' में प्रत्यय : इक। 'निर्दोष' में उपसर्ग: निर्।

**Solution:**

### Step 1: Analyzing the word 'स्वाभाविक':

यह शब्द मूल शब्द 'स्वभाव' में 'इक' प्रत्यय के जुड़ने से बना है। प्रत्यय वे शब्दांश होते हैं जो शब्द के अंत में जुड़कर नया अर्थ देते हैं।

स्वभाव + इक = स्वाभाविक

अतः, इसमें प्रत्यय 'इक' है।

This word is formed by adding the suffix 'ik' to the root word 'swabhav'. Suffixes are morphemes that are added at the end of a word to give a new meaning.

Swabhav + ik = Swabhavik

Thus, the suffix is 'ik'.

### Step 2: Analyzing the word 'निर्दोष':

यह शब्द मूल शब्द 'दोष' में 'निर्' उपसर्ग के जुड़ने से बना है। उपसर्ग वे शब्दांश होते हैं जो शब्द के आरंभ में जुड़कर उसका अर्थ बदल देते हैं।

निर् + दोष = निर्दोष

अतः, इसमें उपसर्ग 'निर्' है।

This word is formed by adding the prefix 'nir' to the root word 'dosh'. Prefixes are morphemes that are added at the beginning of a word to change its meaning.

Nir + Dosh = Nirdosh

Thus, the prefix is 'nir'.

#### Quick Tip

उपसर्ग और प्रत्यय को पहचानने के लिए, शब्द में से मूल सार्थक शब्द को अलग करने का प्रयास करें। जो अंश आगे बचेगा वह उपसर्ग होगा, और जो पीछे बचेगा वह प्रत्यय होगा। To identify a prefix and a suffix, try to separate the meaningful root word from the word. The part that remains at the beginning will be the prefix, and the part that remains at the end will be the suffix.

4. दिये गये पद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

पद्यांश 1:

बनो संसृति के मूल रहस्य  
तुम्ही से फैलेगी वह बेल  
विश्व वन सौरभ से भर जाय  
सुमन के खेलो सुन्दर खेल।  
और यह क्या तुम सुनते नहीं  
विधाता का मंगल वरदान-  
"शक्तिशाली हो, विजयी बनो"  
विश्व में गूँज रहा जय गान।

i) उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।

Correct Answer: शीर्षक - 'पुरूरवा-उर्वशी' (या 'उर्वशी'), कवि - रामधारी सिंह 'दिनकर'। Solution:

**Step 1: Identifying the Text:**

प्रस्तुत पद्यांश राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित उनके प्रसिद्ध काव्य-नाटक 'उर्वशी' के 'पुरूरवा-उर्वशी' संवाद अंश से लिया गया है।

This poetic passage is taken from the 'Pururava-Urvashi' dialogue section of the famous poetic drama 'Urvashi', composed by the national poet Ramdhari Singh 'Dinkar'.

#### Quick Tip

रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविताओं में अक्सर पौरुष, ओज और कर्म का संदेश होता है। जब भी उनकी पंक्तियाँ पढ़ें, तो इस प्रेरणादायक और शक्तिशाली भाव को खोजने का प्रयास करें। The poetry of Ramdhari Singh 'Dinkar' often contains a message of valor, vigor, and action. Whenever you read his lines, try to find this inspirational and powerful sentiment.

ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

**Correct Answer:** रेखांकित अंश में कवि मनुष्य को प्रेरित करते हुए कहते हैं कि उसे फूलों के समान

सुन्दर और आनंदपूर्ण कर्म करने चाहिए, जिससे यह संसार रूपी वन सुगन्धित और खुशहाल हो जाए।  
**Solution:**

**Step 1: Explaining the Underlined Text:**

रेखांकित अंश : सुमन के खेलो सुन्दर खेल।

**व्याख्या :** इस पंक्ति में कवि मनुष्य को जीवन को एक सुन्दर खेल की तरह जीने का आह्वान कर रहे हैं। 'सुमन' अर्थात् फूल, सौंदर्य, कोमलता और आनंद का प्रतीक है। कवि चाहते हैं कि मनुष्य अपने जीवन में ऐसे श्रेष्ठ और सुंदर कर्म करे जो फूलों के समान हों, जिनसे चारों ओर आनंद और सकारात्मकता की सुगंध फैले। जिस प्रकार फूल खिलकर पूरे वन को सुगन्धित कर देते हैं, उसी प्रकार मनुष्य के सत्कर्मों से यह संसार रूपी वन भी आनंद और सौंदर्य से भर जाना चाहिए।

**Underlined part:** Suman ke khelo sundar khel. (Play the beautiful game of flowers.)

**Explanation:** In this line, the poet is calling upon humanity to live life like a beautiful game. 'Suman' or flower is a symbol of beauty, tenderness, and joy. The poet wants man to perform such noble and beautiful deeds in his life that are like flowers, spreading the fragrance of joy and positivity all around. Just as blooming flowers fill the entire forest with fragrance, similarly, with the good deeds of man, this world-forest should also be filled with joy and aroma.

**Quick Tip**

रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविताओं में अक्सर पौरुष, ओज और कर्म का संदेश होता है। जब भी उनकी पंक्तियाँ पढ़ें, तो इस प्रेरणादायक और शक्तिशाली भाव को खोजने का प्रयास करें। The poetry of Ramdhari Singh 'Dinkar' often contains a message of valor, vigor, and action. Whenever you read his lines, try to find this inspirational and powerful sentiment.

iii) 'बनो संसृति के मूल रहस्य' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

**Correct Answer:** इस पंक्ति का आशय है कि मनुष्य को इस सृष्टि का मूल आधार और केंद्रीय शक्ति

बनना चाहिए, जिससे संपूर्ण मानवता का विकास हो। **Solution:**

**Step 1: Explaining the Meaning of the Line:**

इस पंक्ति के माध्यम से कवि मनुष्य को उसकी असीम क्षमताओं का बोध करा रहे हैं। 'संसृति' का अर्थ है संसार या सृष्टि। कवि कहते हैं कि हे मनुष्य, तुम इस सृष्टि के केवल एक साधारण अंग नहीं हो, बल्कि तुम्हें इसका 'मूल रहस्य' अर्थात् इसकी केंद्रीय और मौलिक शक्ति बनना है। तुम्हें वह स्रोत बनना है जहाँ से मानवता और संस्कृति की बेल फैलेगी और पूरे विश्व को आनंदित करेगी। यह मनुष्य को निष्क्रिय रहने के बजाय एक सृजनकर्ता बनने की प्रेरणा है।

Through this line, the poet is making man aware of his infinite potential. 'Samsriti' means the world or creation. The poet says, "O man, you are not just an ordinary part of this creation, but you must become its 'mool rahasya' or its central and fundamental power." You must become the source from which the creeper of humanity and culture will spread and delight the entire

world. It is an inspiration for man to become a creator instead of being passive.

#### Quick Tip

रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविताओं में अक्सर पौरुष, ओज और कर्म का संदेश होता है। जब भी उनकी पंक्तियाँ पढ़ें, तो इस प्रेरणादायक और शक्तिशाली भाव को खोजने का प्रयास करें। The poetry of Ramdhari Singh 'Dinkar' often contains a message of valor, vigor, and action. Whenever you read his lines, try to find this inspirational and powerful sentiment.

iv) इस पद्यांश में पूरा विश्व किसका विजय गान कर रहा है ?

**Correct Answer:** इस पद्यांश में पूरा विश्व विधाता का वरदान प्राप्त शक्तिशाली और विजयी मानव का जय गान कर रहा है। **Solution:**

#### Step 1: Finding the Answer from the Passage:

पद्यांश की अंतिम पंक्तियों में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि विधाता का मंगल वरदान "शक्तिशाली हो, विजयी बनो" पूरे विश्व में एक जय गान के रूप में गूँज रहा है। अतः, यह जय गान उस मनुष्य का है जो अपने पुरुषार्थ से शक्तिशाली बनता है और जीवन के हर क्षेत्र में विजय प्राप्त करता है। यह मानव की शक्ति और उसकी विजय की कामना का गान है।

The last lines of the passage clearly state that the creator's auspicious boon, "Be powerful, be victorious," is echoing throughout the world as a victory song. Therefore, this victory song is for that human who becomes powerful through his efforts and achieves victory in every field of life. It is a song celebrating human power and the aspiration for victory.

#### Quick Tip

रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविताओं में अक्सर पौरुष, ओज और कर्म का संदेश होता है। जब भी उनकी पंक्तियाँ पढ़ें, तो इस प्रेरणादायक और शक्तिशाली भाव को खोजने का प्रयास करें। The poetry of Ramdhari Singh 'Dinkar' often contains a message of valor, vigor, and action. Whenever you read his lines, try to find this inspirational and powerful sentiment.

v) 'शक्तिशाली हो, विजयी बनो' पंक्ति के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है ?

**Correct Answer:** इस पंक्ति के माध्यम से कवि मनुष्य को अपनी आंतरिक शक्तियों को पहचानकर, पुरुषार्थ करने और जीवन की सभी चुनौतियों पर विजय प्राप्त करने का संदेश देना चाहता है। **Solution:**

#### Step 1: Analyzing the Message:

यह पंक्ति एक प्रेरणादायक संदेश देती है। कवि यह संदेश देना चाहते हैं कि मनुष्य को स्वयं को कम-जोर या असहाय नहीं समझना चाहिए। विधाता ने उसे अपार शक्ति प्रदान की है। उसे अपनी इस शक्ति को पहचानना चाहिए, पुरुषार्थ करना चाहिए और जीवन में आने वाली हर बाधा और कठिनाई पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। यह निष्क्रियता को त्यागकर सक्रिय, कर्मठ और सफल बनने का संदेश है।

This line gives an inspirational message. The poet wants to convey that man should not consider himself weak or helpless. The creator has bestowed immense power upon him. He should recognize this power, make efforts, and conquer every obstacle and difficulty that comes in life. It is a message to abandon passivity and become active, diligent, and successful.

### Quick Tip

रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविताओं में अक्सर पौरुष, ओज और कर्म का संदेश होता है। जब भी उनकी पंक्तियाँ पढ़ें, तो इस प्रेरणादायक और शक्तिशाली भाव को खोजने का प्रयास करें। The poetry of Ramdhari Singh 'Dinkar' often contains a message of valor, vigor, and action. Whenever you read his lines, try to find this inspirational and powerful sentiment.

4. (अथवा) दिये गये पद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

पद्यांश 2:

सूखी जाती मलिन लतिका जो धरा में पड़ी हो।  
तो पाँवों के निकट उसको श्याम के ला गिराना।  
यों सीधे से प्रकट करना प्रीति से वंचिता हो।  
मेरा होना अति मलिन और सूखती नित्य जाना ॥

i) उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक और कवि का नामोल्लेख कीजिए।

Correct Answer: शीर्षक - 'पवन-दूतिका', कवि - अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'। Solution:

### Step 1: Identifying the Text:

यह पद्यांश अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्वारा रचित खड़ी बोली के प्रथम महाकाव्य 'प्रियप्रवास' के 'पवन-दूतिका' प्रसंग से लिया गया है। इसमें विरहिणी राधा पवन को अपनी दूतिका बनाकर कृष्ण के पास अपना संदेश भेज रही हैं।

This passage is taken from the 'Pawan-Dutika' context of 'Priyapravas', the first epic poem in Khari Boli, composed by Ayodhyasingh Upadhyay 'Hariaudh'. In this, the separated Radha is sending her message to Krishna by making the wind her messenger.

### Quick Tip

'पवन-दूतिका' का नाम आते ही 'मानवीकरण' अलंकार को अवश्य याद रखें, क्योंकि पूरी कविता इसी अलंकार पर आधारित है। साथ ही, विरह-वर्णन में 'उपमा' एक बहुत सामान्य और प्रभावी अलंकार है। As soon as you see the name 'Pawan-Dutika', you must remember the 'Personification' figure of speech, as the entire poem is based on it. Also, 'Simile' is a very common and effective figure of speech in descriptions of separation.

ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

**Correct Answer:** रेखांकित अंश में राधा पवन से कह रही है कि हे पवन, यदि तुम्हें कोई सूखी लता मिले तो उसे धीरे से उड़ाकर मेरे प्रियतम कृष्ण के पैरों के पास गिरा देना। **Solution:**

**Step 1: Explaining the Underlined Text:**

**रेखांकित अंश :** तो पाँवों के निकट उसको श्याम के ला गिराना।

**व्याख्या :** विरह में व्याकुल राधा पवन को अपनी दूतिका बनाकर समझा रही हैं कि वह किस प्रकार कृष्ण तक उनकी पीड़ा का संदेश पहुँचा सकती है। वे पवन से कहती हैं कि यदि तुम्हें मार्ग में कोई मुरझाई हुई लता धरती पर पड़ी मिले, तो उसे बड़े स्नेह से उठाकर लाना और मेरे प्रियतम श्याम (श्रीकृष्ण) के चरणों के पास धीरे से रख देना। राधा सीधे-सीधे अपनी व्यथा नहीं कहलवाना चाहती, बल्कि प्रतीकों के माध्यम से अपनी बात रखना चाहती हैं।

**Underlined part:** To paanvon ke nikat usko Shyam ke la girana. (Then bring it and drop it near the feet of Shyam.)

**Explanation:** Radha, distressed in separation, is explaining to the wind, her messenger, how it can convey the message of her pain to Krishna. She tells the wind that if it finds a withered creeper lying on the ground on its way, it should lovingly pick it up, bring it, and gently place it near the feet of her beloved Shyam (Sri Krishna). Radha does not want her sorrow to be stated directly, but wishes to convey her message through symbols.

### Quick Tip

'पवन-दूतिका' का नाम आते ही 'मानवीकरण' अलंकार को अवश्य याद रखें, क्योंकि पूरी कविता इसी अलंकार पर आधारित है। साथ ही, विरह-वर्णन में 'उपमा' एक बहुत सामान्य और प्रभावी अलंकार है। As soon as you see the name 'Pawan-Dutika', you must remember the 'Personification' figure of speech, as the entire poem is based on it. Also, 'Simile' is a very common and effective figure of speech in descriptions of separation.

iii) सूखी लता के माध्यम से नायिका अपने श्याम को क्या संदेश देना चाहती है ?

**Correct Answer:** सूखी लता के माध्यम से नायिका (राधा) यह संदेश देना चाहती हैं कि जिस प्रकार

यह लता सूखकर कांतिहीन हो गई है, उसी प्रकार मैं भी आपके प्रेम से वंचित होकर प्रतिदिन मुरझाती और सूखती जा रही हूँ। **Solution:**

### Step 1: Analyzing the Symbolism:

यहाँ सूखी लता एक प्रतीक है। नायिका (राधा) पवन से कहती हैं कि जब तुम सूखी लता को कृष्ण के चरणों के पास गिराओगे, तो वह स्वयं समझ जाएँगे। इस प्रतीक के माध्यम से राधा यह संदेश देना चाहती हैं कि जिस प्रकार यह लता किसी सहारे के बिना सूखकर मलिन और कांतिहीन हो गई है, ठीक उसी प्रकार मैं (राधा) भी आपके (कृष्ण के) प्रेम और विरह में प्रतिदिन सूखती और मलिन होती जा रही हूँ।

The withered creeper here is a symbol. The heroine (Radha) tells the wind that when you drop the withered creeper near Krishna's feet, he will understand on his own. Through this symbol, Radha wants to convey the message that just as this creeper has dried up, become pale, and lost its luster without support, in the same way, I (Radha) am also drying up and becoming pale every day in your (Krishna's) love and separation.

#### Quick Tip

'पवन-दूतिका' का नाम आते ही 'मानवीकरण' अलंकार को अवश्य याद रखें, क्योंकि पूरी कविता इसी अलंकार पर आधारित है। साथ ही, विरह-वर्णन में 'उपमा' एक बहुत सामान्य और प्रभावी अलंकार है। As soon as you see the name 'Pawan-Dutika', you must remember the 'Personification' figure of speech, as the entire poem is based on it. Also, 'Simile' is a very common and effective figure of speech in descriptions of separation.

iv) कवि ने नायिका की शारीरिक स्थिति की तुलना किससे और क्यों की है ?

**Correct Answer:** कवि ने नायिका की शारीरिक स्थिति की तुलना 'सूखी जाती मलिन लतिका' (एक मुरझाती हुई कांतिहीन लता) से की है। यह तुलना इसलिए की है क्योंकि विरह की अग्नि में जलती हुई राधा का शरीर भी उसी लता के समान कांतिहीन, दुर्बल और निस्तेज हो गया है। **Solution:**

### Step 1: Identifying the Comparison:

**तुलना :** कवि ने नायिका (राधा) की शारीरिक स्थिति की तुलना 'सूखी जाती मलिन लतिका' से की है।

**कारण :** यह तुलना अत्यंत सटीक है क्योंकि लता की तरह ही नायिका का जीवन भी अपने आश्रय (श्रीकृष्ण) पर निर्भर है। जैसे लता अपने वृक्ष से अलग होकर सूख जाती है, वैसे ही राधा कृष्ण के वियोग में सूखती जा रही हैं। 'मलिन' शब्द दोनों के लिए प्रयुक्त हुआ है - लता धूल-धूसरित है और राधा का मुखमंडल विरह के कारण मलिन (उदास और कांतिहीन) है।

**Comparison:** The poet has compared the physical state of the heroine (Radha) to a 'sookhi jaati malin latika' (a drying, pale creeper).

**Reason:** This comparison is very apt because, like the creeper, the heroine's life also depends on her support (Sri Krishna). Just as a creeper dries up when separated from its tree, similarly, Radha is withering in separation from Krishna. The word 'malin' (pale/sad) is used for both - the creeper is covered in dust, and Radha's face is pale due to separation.

### Quick Tip

'पवन-दूतिका' का नाम आते ही 'मानवीकरण' अलंकार को अवश्य याद रखें, क्योंकि पूरी कविता इसी अलंकार पर आधारित है। साथ ही, विरह-वर्णन में 'उपमा' एक बहुत सामान्य और प्रभावी अलंकार है। As soon as you see the name 'Pawan-Dutika', you must remember the 'Personification' figure of speech, as the entire poem is based on it. Also, 'Simile' is a very common and effective figure of speech in descriptions of separation.

v) प्रस्तुत पद्यांश की अलंकार योजना पर प्रकाश डालिए।

**Correct Answer:** इस पद्यांश में मुख्य रूप से उपमा और मानवीकरण अलंकार का प्रयोग हुआ है।

नायिका की तुलना सूखी लता से करने में 'उपमा' अलंकार है। पवन को दूतिका बनाकर उससे बातें करने में 'मानवीकरण' अलंकार है। **Solution:**

#### Step 1: Identifying Figures of Speech:

इस पद्यांश में निम्नलिखित प्रमुख अलंकार हैं:

- **उपमा (Simile):** नायिका (राधा) की विरह-दशा की तुलना सूखी और मलिन लता से की गई है। यहाँ समानता का आधार मुरझाना और कांतिहीन होना है।
- **मानवीकरण (Personification):** कवि ने निर्जीव पवन को एक सजीव दूती के रूप में चित्रित किया है जो सुन सकती है, समझ सकती है और राधा के निर्देशों का पालन कर सकती है। पवन से बातें करना मानवीकरण का उत्कृष्ट उदाहरण है।
- **काव्यलिंग (Poetic Reason):** सूखी लता को कृष्ण के पैरों पर गिराने का कारण यह बताया गया है कि इससे उन्हें राधा की विरह-दशा का बोध हो जाएगा।

The following major figures of speech are present in this passage:

- **Upama (Simile):** The heroine's (Radha's) state of separation is compared to a dry and pale creeper. The basis of similarity here is withering and loss of luster.
- **Maanvikaran (Personification):** The poet has depicted the inanimate wind as a living messenger who can listen, understand, and follow Radha's instructions. Conversing with the wind is an excellent example of personification.
- **Kavyalinga (Poetic Reason):** The reason for dropping the withered creeper at Krishna's feet is stated to be that it will make him realize Radha's state of separation.

### Quick Tip

'पवन-दूतिका' का नाम आते ही 'मानवीकरण' अलंकार को अवश्य याद रखें, क्योंकि पूरी कविता इसी अलंकार पर आधारित है। साथ ही, विरह-वर्णन में 'उपमा' एक बहुत सामान्य और प्रभावी अलंकार है। As soon as you see the name 'Pawan-Dutika', you must remember the 'Personification' figure of speech, as the entire poem is based on it. Also, 'Simile' is a very common and effective figure of speech in descriptions of separation.

5. (क) i) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

**Correct Answer:**

**साहित्यिक परिचय :** कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' हिन्दी के श्रेष्ठ रेखाचित्रकार, संस्मरणकार और निबंधकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनकी रचनाओं में कलागत आत्मपरकता, चित्रात्मकता और संस्मरणात्मकता पाई जाती है। उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया और अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक व राजनीतिक जीवन में व्याप्त विसंगतियों पर प्रहार किया। उनकी भाषा तत्सम प्रधान, सरल और मुहावरेदार है।

**प्रमुख रचनाएँ :**

**रेखाचित्र :** नई पीढ़ी के विचार, जिंदगी मुस्कुराई, माटी हो गई सोना।

**लघु कथा :** आकाश के तारे, धरती के फूल।

**संस्मरण :** दीप जले शंख बजे।

**Solution:**

**Step 1: Introduction to the Author and His Style:**

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' (1906-1995) हिन्दी साहित्य के एक जाने-माने गद्यकार थे। उन्होंने मुख्य रूप से रेखाचित्र, संस्मरण और ललित निबंध की विधाओं में लेखन किया। उनके लेखन की प्रमुख विशेषता मानवीय संवेदनाओं और भावों का मार्मिक चित्रण है। उन्होंने पत्रकारिता को एक मिशन के रूप में अपनाया और 'ज्ञानोदय' तथा 'नया जीवन' जैसी पत्रिकाओं का संपादन करते हुए सामाजिक चेतना जगाने का कार्य किया। उनकी भाषा में अद्भुत प्रवाह और सरसता है।

Kanhaiyalal Mishra 'Prabhakar' (1906-1995) was a well-known prose writer in Hindi literature. He primarily wrote in the genres of reportage, memoirs, and literary essays. The main characteristic of his writing is the poignant depiction of human sensitivities and emotions. He adopted journalism as a mission and worked to awaken social consciousness while editing magazines like 'Gyanoday' and 'Naya Jeevan'. His language possesses a remarkable flow and sweetness.

**Step 2: Listing Major Works:**

उनकी प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं:

- रेखाचित्र संग्रह : 'नई पीढ़ी के विचार', 'जिंदगी मुस्कुराई', 'माटी हो गई सोना', 'भूले-बिसरे चेहरे'।
- लघु कथा संग्रह : 'आकाश के तारे', 'धरती के फूल'।
- संस्मरण : 'दीप जले शंख बजे'।
- ललित निबंध : 'क्षण बोले कण मुस्काए', 'बाजे पायलिया के घुँघरू'।

His major works are as follows:

- **Reportage Collections:** 'Nai Pidhi ke Vichar', 'Zindagi Muskurai', 'Maati ho Gayi Sona', 'Bhule-Bisre Chehre'.
- **Short Story Collections:** 'Akash ke Tare', 'Dharti ke Phool'.
- **Memoirs:** 'Deep Jale Shankh Baje'.

- **Literary Essays:** 'Kshan Bole Kan Muskaye', 'Baje Payaliya ke Ghunghroo'.

### Quick Tip

'प्रभाकर' जी को उनकी मार्मिक गद्य शैली और पत्रकारिता के लिए याद किया जाता है। साहित्यिक परिचय में, लेखक की विधा, शैली और भाषा पर टिप्पणी करना महत्वपूर्ण है। 'माटी हो गई सोना' और 'दीप जले शंख बजे' उनकी बहुत प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। 'Prabhakar' ji is remembered for his poignant prose style and journalism. In a literary introduction, it is important to comment on the author's genre, style, and language. 'Maati ho Gayi Sona' and 'Deep Jale Shankh Baje' are his very famous works.

5. (क) ii) प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

### Correct Answer:

**साहित्यिक परिचय :** श्रेष्ठ विचारक, समालोचक एवं निबंधकार प्रोफेसर जी. सुन्दर रेड्डी अहिंदी भाषी होते हुए भी हिन्दी भाषा के प्रकांड विद्वान थे। उन्होंने दक्षिण भारत की भाषाओं और उनके साहित्य का हिन्दी से तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। उनके निबंधों में वैज्ञानिक दृष्टि से भाषा की समस्याओं का समाधान मिलता है। वे हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान के लिए जाने जाते हैं।  
**प्रमुख रचनाएँ :** साहित्य और समाज, मेरे विचार, हिन्दी और तेलुगू : एक तुलनात्मक अध्ययन, वैचारिकी, शोध और बोध, दक्षिण की भाषाएँ और उनका साहित्य।

### Solution:

#### Step 1: Introduction to the Author and His Contribution:

प्रोफेसर जी. सुन्दर रेड्डी (1919-2005) एक प्रख्यात साहित्यकार और विचारक थे। उनकी मातृभाषा तेलुगू थी, परन्तु उन्होंने हिन्दी भाषा की सेवा में अपना जीवन समर्पित कर दिया। उनका साहित्यिक योगदान मुख्य रूप से वैचारिक निबंधों और आलोचना के क्षेत्र में है। वे आंध्र विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष भी रहे। उनका विशेष कार्य हिन्दी और दक्षिण भारतीय भाषाओं के बीच सेतु का निर्माण करना था। उन्होंने भाषा और आधुनिकता पर गहन चिंतन किया।

Professor G. Sundar Reddy (1919-2005) was a renowned litterateur and thinker. His mother tongue was Telugu, yet he dedicated his life to the service of the Hindi language. His literary contributions are mainly in the field of ideological essays and criticism. He was also the Head of the Hindi Department at Andhra University. His special work was to build a bridge between Hindi and South Indian languages. He reflected deeply on language and modernity.

#### Step 2: Listing Major Works:

उनकी प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं:

- **निबंध संग्रह :** 'साहित्य और समाज', 'मेरे विचार', 'वैचारिकी, शोध और बोध'।
- **आलोचनात्मक ग्रंथ :** 'हिन्दी और तेलुगू : एक तुलनात्मक अध्ययन', 'दक्षिण की भाषाएँ और उनका साहित्य'।

- **अन्य :** 'लैंग्वेज प्रॉब्लम इन इंडिया' (अंग्रेजी में संपादित)।

His major works are as follows:

- **Essay Collections:** 'Sahitya aur Samaj', 'Mere Vichar', 'Vichariki, Shodh aur Bodh'.
- **Critical Works:** 'Hindi aur Telugu: Ek Tulanatmak Adhyayan', 'Dakshin ki Bhashayen aur Unka Sahitya'.
- **Other:** 'Language Problem in India' (Edited, in English).

### Quick Tip

प्रोफेसर रेड्डी का नाम आते ही 'अहिंदी भाषी हिन्दी लेखक' और 'हिन्दी व दक्षिण भारतीय भाषाओं के बीच सेतु' ये दो वाक्यांश याद रखें। यह उनके साहित्यिक परिचय का सार है। Whenever Professor Reddy's name comes up, remember these two phrases: 'non-Hindi speaking Hindi writer' and 'a bridge between Hindi and South Indian languages'. This is the essence of his literary introduction.

5. (क) iii) डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

### Correct Answer:

**साहित्यिक परिचय :** भारत के पूर्व राष्ट्रपति और महान वैज्ञानिक डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम एक उच्च कोटि के लेखक भी थे। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारत के युवाओं को प्रेरित करने और देश को एक विकसित राष्ट्र बनाने के अपने सपनों को साझा किया। उनके लेखन की भाषा अत्यंत सरल और प्रेरक है। उनकी आत्मकथा 'विंग्स ऑफ फायर' युवाओं के लिए एक प्रेरणा स्रोत है। उन्होंने विज्ञान और आध्यात्मिकता के समन्वय पर बल दिया।

**प्रमुख रचनाएँ :** विंग्स ऑफ फायर (अग्नि की उड़ान), इण्डिया 2020: ए विजन फॉर द न्यू मिलेनियम, इगनाइटेड माइंड्स, माई जर्नी।

### Solution:

#### Step 1: Introduction to the Author and His Literary Persona:

डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम (1931-2015), जिन्हें 'मिसाइल मैन' के नाम से जाना जाता है, भारत के 11वें राष्ट्रपति थे। वे एक महान वैज्ञानिक होने के साथ-साथ एक संवेदनशील और प्रेरणादायक लेखक भी थे। उनका लेखन साहित्यिक विधाओं के पारंपरिक फ्रेमवर्क में नहीं आता, बल्कि यह उनके अनुभवों, विचारों और भारत के भविष्य के लिए उनके दृष्टिकोण का प्रतिबिंब है। उन्होंने मुख्य रूप से अंग्रेजी में लिखा, जिसका बाद में कई भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ।

Dr. A.P.J. Abdul Kalam (1931-2015), known as the 'Missile Man', was the 11th President of India. Along with being a great scientist, he was also a sensitive and inspirational writer. His writing does not fit into the traditional framework of literary genres but is a reflection of his experiences, thoughts, and his vision for the future of India. He wrote primarily in English, which was later translated into many Indian languages.

## Step 2: Listing Major Works:

उनकी प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं:

- 'विंग्स ऑफ फायर' (Wings of Fire): उनकी विश्वप्रसिद्ध आत्मकथा, जिसका हिन्दी अनुवाद 'अग्नि की उड़ान' है।
- 'इण्डिया 2020: ए विजन फॉर द न्यू मिलेनियम' (India 2020: A Vision for the New Millennium): इसमें उन्होंने भारत को 2020 तक एक विकसित राष्ट्र बनाने की अपनी योजना प्रस्तुत की।
- 'इग्नाइटेड माइंड्स' (Ignited Minds): युवाओं को प्रेरित करने वाली एक अत्यंत प्रभावशाली पुस्तक।
- 'माई जर्नी: ट्रांसफॉर्मिंग ड्रीम्स इन्टू एक्शंस' (My Journey: Transforming Dreams into Actions): उनके जीवन की यात्रा का एक और प्रेरणादायक वृत्तांत।

His major works are as follows:

- '**Wings of Fire**': His world-famous autobiography, the Hindi translation of which is 'Agni ki Udaan'.
- '**India 2020: A Vision for the New Millennium**': In this, he presented his plan to make India a developed nation by 2020.
- '**Ignited Minds**': A highly influential book that inspires the youth.
- '**My Journey: Transforming Dreams into Actions**': Another inspirational account of his life's journey.

### Quick Tip

डॉ० कलाम के साहित्यिक परिचय में 'वैज्ञानिक', 'राष्ट्रपति', 'प्रेरणादायक लेखक' और 'युवाओं के पथ-प्रदर्शक' जैसे शब्दों का प्रयोग अवश्य करें। उनकी रचना 'विंग्स ऑफ फायर' का उल्लेख करना अनिवार्य है। In the literary introduction of Dr. Kalam, be sure to use words like 'scientist', 'President', 'inspirational writer', and 'guide for the youth'. Mentioning his work 'Wings of Fire' is essential.

5. (ख) i) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

### Correct Answer:

**साहित्यिक परिचय :** अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्विवेदी युग के प्रमुख कवि और गद्यकार हैं। वे खड़ी बोली हिन्दी के प्रथम महाकवि माने जाते हैं। उन्होंने ब्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों में काव्य रचना की। उनकी रचनाओं में प्राचीन कथा-प्रसंगों में नवीन उद्भावनाएँ तथा लोकमंगल का स्वर प्रमुख है। विरह-वर्णन और प्रकृति-चित्रण में वे सिद्धहस्त थे।

**प्रमुख रचनाएँ :**

**महाकाव्य :** प्रियप्रवास (खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य), वैदेही वनवास।

काव्य-संग्रह : रस-कलश, चुभते चौपदे, चोखे चौपदे।  
उपन्यास : अधखिला फूल, ठेठ हिन्दी का ठाठ।

**Solution:**

**Step 1: Introduction to the Poet and His Significance:**

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (1865-1947) को आधुनिक हिन्दी काव्य के विकास में एक महत्वपूर्ण स्तंभ माना जाता है। वे द्विवेदी युग के प्रतिनिधि कवि थे। उन्होंने हिन्दी कविता को ब्रजभाषा के प्रभाव से निकालकर खड़ी बोली में प्रतिष्ठित करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई। उन्हें 'कवि सम्राट' की उपाधि से भी सम्मानित किया गया था।

Ayodhyasingh Upadhyay 'Hariaudh' (1865-1947) is considered an important pillar in the development of modern Hindi poetry. He was a representative poet of the Dwivedi era. He played a historical role in liberating Hindi poetry from the influence of Braj Bhasha and establishing it in Khari Boli. He was also honored with the title of 'Kavi Samrat' (Emperor of Poets).

**Step 2: Listing Major Works:**

उनकी प्रमुख कृतियाँ विभिन्न विधाओं में फैली हुई हैं:

- **महाकाव्य :** 'प्रियप्रवास' (इसे खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य होने का गौरव प्राप्त है), 'वैदेही वनवास'।
- **मुक्तक काव्य :** 'रस-कलश' (ब्रजभाषा में), 'चुभते चौपदे' और 'चोखे चौपदे' (मुहावरेदार भाषा में)।
- **उपन्यास :** 'अधखिला फूल', 'ठेठ हिन्दी का ठाठ'।

His major works are spread across various genres:

- **Epics:** 'Priyapravas' (honored as the first epic poem of Khari Boli), 'Vaidehi Vanvas'.
- **Lyrical Poetry:** 'Ras-Kalash' (in Braj Bhasha), 'Chubhte Chaupade' and 'Chokhe Chaupade' (in idiomatic language).
- **Novels:** 'Adhkhila Phool', 'Theth Hindi ka Thath'.

**Quick Tip**

'हरिऔध' जी का नाम आते ही 'प्रियप्रवास' और 'खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य' ये दो तथ्य अवश्य याद रखें। यह उनके साहित्यिक परिचय का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। When the name 'Hariaudh' comes up, you must remember two facts: 'Priyapravas' and 'the first epic of Khari Boli'. This is the most important part of his literary introduction.

5. (ख) ii) जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए।  
(अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

**Correct Answer:**

**साहित्यिक परिचय :** जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रवर्तक, उन्नायक तथा प्रतिनिधि कवि हैं। वे एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे, जिन्होंने कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी और निबंध सभी विधाओं में उत्कृष्ट रचनाएँ कीं। उनकी रचनाओं में प्रेम, सौंदर्य, प्रकृति और भारतीय इतिहास-दर्शन का अद्भुत समन्वय मिलता है। उनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ, साहित्यिक और चित्रात्मक है।

**प्रमुख रचनाएँ :**

**महाकाव्य :** कामायनी।

**काव्य :** आँसू, झरना, लहर।

**नाटक :** चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, ध्रुवस्वामिनी।

**उपन्यास :** कंकाल, तितली।

**Solution:**

### **Step 1: Introduction to the Poet and His Significance:**

जयशंकर प्रसाद (1889-1937) आधुनिक हिन्दी साहित्य के 'छायावाद' युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक और उसके प्रवर्तक माने जाते हैं। उनका साहित्य जीवन के सूक्ष्म और गहन भावों का चित्रण करता है। उन्होंने कविता को एक नई भाषा, नई शैली और नई संवेदना दी। वे एक सफल नाटककार और कहानीकार भी थे।

Jaishankar Prasad (1889-1937) is considered one of the four main pillars and the originator of the 'Chhayavaad' era of modern Hindi literature. His literature depicts the subtle and profound emotions of life. He gave poetry a new language, a new style, and a new sensibility. He was also a successful playwright and storyteller.

### **Step 2: Listing Major Works:**

उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं:

- महाकाव्य : 'कामायनी' (छायावाद की सर्वश्रेष्ठ कृति)।
- काव्य-संग्रह : 'आँसू', 'झरना', 'लहर', 'कानन कुसुम'।
- नाटक : 'चन्द्रगुप्त', 'स्कन्दगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी', 'अजातशत्रु'।
- उपन्यास : 'कंकाल', 'तितली', 'इरावती' (अपूर्ण)।
- कहानी संग्रह : 'आकाशदीप', 'इन्द्रजाल', 'छाया'।

His major works are:

- **Epic:** 'Kamayani' (the masterpiece of Chhayavaad).
- **Poetry Collections:** 'Ansu', 'Jharna', 'Lahar', 'Kanan Kusum'.
- **Plays:** 'Chandragupta', 'Skandagupta', 'Dhruvaswamini', 'Ajatashatru'.
- **Novels:** 'Kankal', 'Titli', 'Iravati' (incomplete).
- **Story Collections:** 'Akashdeep', 'Indrajal', 'Chhaya'.

### Quick Tip

जयशंकर प्रसाद का परिचय देते समय 'छायावाद के प्रवर्तक' और 'कामायनी' महाकाव्य का उल्लेख करना अनिवार्य है। उनके ऐतिहासिक नाटक (चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त) भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। When introducing Jaishankar Prasad, mentioning 'the founder of Chhayavaad' and the epic 'Kamayani' is essential. His historical plays (Chandragupta, Skandagupta) are also very important.

5. (ख) iii) महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

#### Correct Answer:

**साहित्यिक परिचय :** महादेवी वर्मा छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। उन्हें 'आधुनिक युग की मीरा' कहा जाता है। उनकी कविताओं में विरह की वेदना, अज्ञात प्रियतम के प्रति प्रणय-निवेदन और रहस्यवादी भावना की प्रधानता है। उन्होंने गद्य में उत्कृष्ट रेखाचित्र और संस्मरण भी लिखे हैं, जिनमें शोषित-पीड़ितों के प्रति करुणा व्यक्त हुई है।

**प्रमुख रचनाएँ :**

**काव्य-संग्रह :** नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, यामा।

**गद्य (रेखाचित्र/संस्मरण):** अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी।

#### Solution:

##### Step 1: Introduction to the Poet and Her Significance:

महादेवी वर्मा (1907-1987) हिन्दी साहित्य के छायावादी युग की एक महान कवयित्री थीं। वेदना और करुणा उनके काव्य का मूल स्वर है, जिसके कारण उन्हें 'आधुनिक युग की मीरा' की उपाधि दी गई। उनकी कविता में एक अज्ञात सत्ता के प्रति विरह का भाव अत्यंत मार्मिक रूप में व्यक्त हुआ है। कविता के अतिरिक्त, उन्होंने अपने गद्य लेखन, विशेषकर रेखाचित्रों और संस्मरणों, के माध्यम से समाज के उपेक्षित पात्रों को साहित्य में स्थान दिया।

Mahadevi Varma (1907-1987) was a great poetess of the Chhayavaadi era of Hindi literature. Pain and compassion are the core notes of her poetry, due to which she was given the title 'Meera of the modern era'. In her poetry, the feeling of separation from an unknown entity is expressed in a very poignant manner. In addition to poetry, through her prose writing, especially reportages and memoirs, she gave a place in literature to the neglected characters of society.

##### Step 2: Listing Major Works:

उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं:

- **काव्य-संग्रह :** 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्यगीत', 'दीपशिखा'। इन सभी का संकलन 'यामा' शीर्षक से प्रकाशित हुआ, जिसके लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला।
- **गद्य रचनाएँ (रेखाचित्र एवं संस्मरण):** 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'पथ के साथी', 'मेरा परिवार'।

His major works are:

- **Poetry Collections:** 'Neehar', 'Rashmi', 'Neerja', 'Sandhyageet', 'Deepshikha'. A collection of all these was published under the title 'Yama', for which she received the Jnanpith Award.
- **Prose Works (Reportages Memoirs):** 'Ateet ke Chalchitra', 'Smriti ki Rekhayein', 'Path ke Saathi', 'Mera Parivar'.

### Quick Tip

महादेवी वर्मा का परिचय 'आधुनिक युग की मीरा' उपाधि के बिना अधूरा है। उनकी रचनाओं में 'यामा' (काव्य) और 'अतीत के चलचित्र' (गद्य) का उल्लेख अवश्य करें। The introduction of Mahadevi Varma is incomplete without the title 'Meera of the modern era'. Be sure to mention her works 'Yama' (poetry) and 'Ateet ke Chalchitra' (prose).

## 6. 'बहादुर' कहानी के उद्देश्य को अपने शब्दों में लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

### Correct Answer:

'बहादुर' कहानी का मुख्य उद्देश्य मध्यमवर्गीय समाज के दिखावे, आडम्बर और संवेदनहीनता पर प्रहार करना है। यह कहानी दर्शाती है कि यह वर्ग नौकरों के प्रति मानवीय व्यवहार नहीं करता और झूठी शान के लिए उन्हें रखता है। कहानी का एक अन्य उद्देश्य वर्ग-भेद और शोषण की समस्या को उजागर करना तथा पाठकों में शोषितों के प्रति सहानुभूति और मानवीय करुणा का भाव जगाना है।

### Solution:

#### Step 1: Understanding the Central Theme of the Story:

अमरकान्त द्वारा लिखित 'बहादुर' कहानी एक नेपाली लड़के दिल बहादुर की कहानी है, जो घर से भागकर एक मध्यमवर्गीय परिवार में नौकर का काम करने लगता है। कहानी का केंद्र बिंदु परिवार के सदस्यों का बहादुर के प्रति बदलता व्यवहार है।

'Bahadur', written by Amarkant, is the story of a Nepali boy, Dil Bahadur, who runs away from home and starts working as a servant in a middle-class family. The focal point of the story is the changing behavior of the family members towards Bahadur.

#### Step 2: Explaining the Objective:

इस कहानी के माध्यम से लेखक के कई उद्देश्य हैं:

1. **मध्यमवर्गीय मानसिकता का चित्रण :** लेखक दिखाना चाहते हैं कि मध्यमवर्गीय लोग अक्सर झूठी शान और दिखावे के लिए नौकर रखते हैं, लेकिन उनके प्रति मानवीय संवेदना नहीं रखते। वे स्वयं को उच्च वर्ग का दिखाने का प्रयास करते हैं लेकिन उनकी मानसिकता संकीर्ण होती है।
2. **शोषण की समस्या :** कहानी बाल-श्रम और नौकरों के शारीरिक व मानसिक शोषण की समस्या को उजागर करती है। बहादुर के प्रति निर्मला और किशोर का व्यवहार इस शोषण का प्रतीक है।
3. **मानवीय करुणा का आह्वान :** जब बहादुर बिना बताए घर छोड़कर चला जाता है, तो परिवार वालों को अपनी गलती का अहसास होता है। इस अंत के माध्यम से लेखक पाठकों में बहादुर जैसे शोषित पात्रों के प्रति सहानुभूति और करुणा का भाव जगाना चाहते हैं।

The author has several objectives through this story:

1. **Portrayal of Middle-Class Mentality:** The author wants to show that middle-class people often keep servants for false prestige and show-off, but lack human sensitivity towards them. They try to present themselves as upper-class, but their mentality is narrow.
2. **The Problem of Exploitation:** The story highlights the problem of child labor and the physical and mental exploitation of servants. The behavior of Nirmala and Kishore towards Bahadur is a symbol of this exploitation.
3. **An Appeal for Human Compassion:** When Bahadur leaves the house without informing anyone, the family members realize their mistake. Through this ending, the author wants to evoke feelings of sympathy and compassion in the readers for exploited characters like Bahadur.

#### Quick Tip

'बहादुर' कहानी का उद्देश्य लिखते समय, 'मध्यमवर्गीय समाज का खोखलापन', 'शोषण' और 'मानवीय संवेदना' इन तीन बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करें। When writing the objective of the story 'Bahadur', focus on these three points: 'the hollowness of middle-class society', 'exploitation', and 'human sensitivity'.

6. (अथवा) 'पंचलाइट' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

#### Correct Answer:

'पंचलाइट' फणीश्वरनाथ 'रेणु' की एक आंचलिक कहानी है। महतो टोली के पंच गाँव के मेले से एक पेट्रोमैक्स (पंचलाइट) खरीदकर लाते हैं, लेकिन टोली में किसी को भी उसे जलाना नहीं आता। इससे पूरी टोली की प्रतिष्ठा दाँव पर लग जाती है। तभी मुनरी नामक लड़की बताती है कि उसका प्रेमी गोधन पंचलाइट जलाना जानता है। गोधन का हुक्का-पानी पंचायत ने बंद कर रखा था। लेकिन टोली की इज्जत बचाने के लिए, पंचायत उसे माफ कर देती है। गोधन पंचलाइट जला देता है और पूरी टोली में खुशी की लहर दौड़ जाती है।

#### Solution:

##### Step 1: Introduction and Setting:

फणीश्वरनाथ 'रेणु' द्वारा रचित 'पंचलाइट' बिहार के ग्रामीण परिवेश की एक प्रसिद्ध आंचलिक कहानी है। कहानी का केंद्र गाँव की एक विशेष जाति-पंचायत, महतो टोली है, जो अपनी प्रतिष्ठा के लिए बहुत सचेत है।

'Panchlait', written by Phanishwarnath 'Renu', is a famous regional story set in the rural environment of Bihar. The story centers on a specific caste-panchayat of a village, the Mahto Toli, which is very conscious of its prestige.

##### Step 2: The Central Conflict:

महतो टोली के लोग मेले से जुमाने के पैसे से एक पेट्रोमैक्स खरीदते हैं, जिसे वे 'पंचलैट' कहते हैं। यह

उनके लिए एक बहुत बड़ी शान की बात है। लेकिन जब उसे जलाने का समय आता है, तो पता चलता है कि टोली में कोई भी उसे जलाना नहीं जानता। दूसरी टोलियों के लोग उनका मजाक उड़ाने लगते हैं, जिससे महतो टोली की इज्जत पर बन आती है।

The people of Mahto Toli buy a Petromax from the fair with fine money, which they call 'Panchlait'. It is a matter of great pride for them. But when the time comes to light it, it is discovered that no one in the Toli knows how to light it. People from other Tolis start making fun of them, putting the honor of Mahto Toli at stake.

### Step 3: The Resolution:

इसी टोली की एक लड़की मुनरी जानती है कि गोधन, जिससे वह प्रेम करती है, पंचलाइट जलाना जानता है। लेकिन गोधन का पंचायत ने हुक्का-पानी बंद कर रखा था क्योंकि वह मुनरी को देखकर सलीमा का फिल्मी गाना गाता था। मुनरी अपनी सहेली के माध्यम से यह बात पंचों तक पहुँचाती है। टोली की इज्जत बचाने के लिए, पंच गोधन को बुलाने का निर्णय लेते हैं और उसका दोष माफ कर देते हैं। गोधन आकर बिना स्पिरिट के ही गरी के तेल से पंचलाइट जला देता है।

A girl from this Toli, Munri, knows that Godhan, whom she loves, knows how to light the Panchlait. But the panchayat had ostracized Godhan because he used to sing a film song of Salima upon seeing Munri. Munri conveys this information to the panchs through her friend. To save the Toli's honor, the panchs decide to call Godhan and forgive his offense. Godhan comes and lights the Panchlait with coconut oil, without spirit.

### Step 4: Conclusion:

पंचलाइट के जलते ही पूरी टोली में खुशी छा जाती है। पंच गोधन से प्रसन्न होकर कहते हैं- "तुम्हारा सात खून माफ। खूब गाओ सलीमा का गाना।" कहानी दर्शाती है कि आवश्यकता बड़े-से-बड़े रूढ़िवादी संस्कारों और निषेधों को बदल देती है।

As soon as the Panchlait is lit, happiness spreads throughout the Toli. The panchs, pleased with Godhan, say - "Your seven murders are forgiven. Sing Salima's song as much as you want." The story shows that necessity changes even the biggest conservative traditions and prohibitions.

#### Quick Tip

'पंचलाइट' का सारांश लिखते समय, इन प्रमुख बिंदुओं को शामिल करें: पंचलाइट खरीदना, किसी का जलाना न जानना, गोधन की जानकारी, पंचायत द्वारा उसे माफ करना, और अंत में पंचलाइट का जलना। यह कहानी व्यक्ति के गुण के सामने जातिगत प्रतिबंधों के टूटने को दर्शाती है। When writing the summary of 'Panchlait', include these key points: buying the Panchlait, no one knowing how to light it, Godhan's knowledge, his forgiveness by the panchayat, and finally, the lighting of the Panchlait. This story depicts the breaking of caste-based restrictions in the face of an individual's skills.

7. स्वपठित खण्डकाव्य के आधार पर किसी एक खण्ड के एक प्रश्न का उत्तर दें। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

(नोट : यहाँ सभी खण्डों के प्रश्नों के उत्तर दिए जा रहे हैं।)

7. i) ('मुक्तियज्ञ') 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की कथावस्तु की प्रमुख विशेषतायें लिखिए।

**Solution:**

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की कथावस्तु की प्रमुख विशेषताएँ हैं: यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की कहानी है, इसका नायक महात्मा गाँधी को बनाया गया है, इसमें ऐतिहासिक घटनाओं (नमक सत्याग्रह, भारत छोड़ो आंदोलन) का काव्यात्मक वर्णन है, यह सत्य, अहिंसा और मानवता का संदेश देता है, और इसकी भाषा सरल व ओजपूर्ण है। यह काव्य राष्ट्रीय चेतना जगाने में सफल रहा है।

**Quick Tip**

'मुक्तियज्ञ' = स्वतंत्रता संग्राम का यज्ञ। इसकी कथावस्तु के केंद्र में गाँधीजी और उनके आंदोलन हैं। 'Muktiyagya' = The yajna (sacrifice) for freedom. At the center of its plot are Gandhiji and his movements.

7. i) ('मुक्तियज्ञ' - अथवा) "राष्ट्र नायक गाँधी 'मुक्तियज्ञ' के मुख्य पुरोधा हैं।" इस कथन को ध्यान में रखते हुए गाँधीजी के चरित्र पर प्रकाश डालिए।

**Solution:**

'मुक्तियज्ञ' में महात्मा गाँधी को मुख्य पुरोधा (मुख्य यज्ञकर्ता) के रूप में चित्रित किया गया है। उनके चरित्र की विशेषताएँ हैं: सत्य और अहिंसा के पुजारी, दृढ़ निश्चयी, सभी धर्मों का सम्मान करने वाले, मानवीय करुणा से ओतप्रोत, और अस्पृश्यता के प्रबल विरोधी। उन्होंने बिना शस्त्र उठाए, सत्य और अहिंसा के बल पर देश को स्वतंत्रता दिलाई। वे सच्चे अर्थों में राष्ट्र नायक हैं।

**Quick Tip**

गाँधीजी के चरित्र-चित्रण में 'सत्य', 'अहिंसा', 'दृढ़ निश्चय' और 'मानवीय करुणा' जैसे शब्दों का प्रयोग अवश्य करें। In the character sketch of Gandhiji, be sure to use words like 'truth', 'non-violence', 'determination', and 'human compassion'.

7. ii) ('सत्य की जीत') 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के सर्वाधिक मार्मिक प्रसंग का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

**Solution:**

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य का सर्वाधिक मार्मिक प्रसंग द्रौपदी के चीरहरण और भरी सभा में उसके अपमान का है। जब दुःशासन उसे निर्वस्त्र करने का प्रयास करता है और सभा में बैठे भीष्म, द्रोण जैसे गुरुजन मौन रहते हैं, तो द्रौपदी की असहाय पुकार अत्यंत करुण और मार्मिक है। वह अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए सभासदों से तर्कपूर्ण प्रश्न पूछती है, जो उनकी नैतिकता को झकझोर देते हैं। यही प्रसंग कथा का चरम है।

### Quick Tip

'सत्य की जीत' का मार्मिक प्रसंग = द्रौपदी का चीरहरण। इसमें द्रौपदी की विवशता और उसके तर्कों पर ध्यान केंद्रित करें। The poignant episode of 'Satya ki Jeet' = Draupadi's disrobing. Focus on Draupadi's helplessness and her arguments.

7. ii) ('सत्य की जीत' - अथवा) "जिएँ हम और जिएँ सब लोग।" इस कथन की पुष्टि 'सत्य की जीत' के आधार पर कर धृतराष्ट्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

### Solution:

'सत्य की जीत' में धृतराष्ट्र अंत में पश्चाताप करते हुए "जिएँ हम और जिएँ सब लोग" की भावना व्यक्त करते हैं, किंतु उनका पूर्व का चरित्र इसके विपरीत है। वे पुत्र-मोह में अंधे, विवेकहीन और शक्ति के दुरुपयोग को रोकने में असमर्थ एक कमजोर शासक हैं। वे अन्याय को देखते हुए भी चुप रहते हैं। अंत में विनाश देखकर उन्हें अपनी गलती का अहसास होता है और वे सर्व-कल्याण की बात करते हैं।

### Quick Tip

धृतराष्ट्र का चरित्र-चित्रण = पुत्र-मोह + विवेकहीनता + अंत में पश्चाताप। Character sketch of Dhritarashtra = Attachment to his son + Lack of wisdom + Repentance in the end.

7. iii) ('रश्मि रथी') 'रश्मि रथी' के पंचम सर्ग की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए।

### Solution:

'रश्मि रथी' के पंचम सर्ग में कुंती और कर्ण की भेंट का मार्मिक वर्णन है। युद्ध को रोकने के अंतिम प्रयास में, कुंती कर्ण के पास जाकर उसे उसके जन्म का रहस्य बताती है और पांडवों के पक्ष में आने का आग्रह करती है। कर्ण कुंती का सम्मान करता है, किंतु दुर्योधन की मित्रता का ऋण चुकाने के लिए उसकी प्रार्थना अस्वीकार कर देता है। वह कुंती को वचन देता है कि वह अर्जुन के अतिरिक्त किसी अन्य पांडव का वध नहीं करेगा, जिससे उसके पाँच पुत्र जीवित रहेंगे।

### Quick Tip

पंचम सर्ग = कुंती-कर्ण संवाद। इसमें माँ की ममता और मित्र के प्रति कर्ण के धर्म-संकट का द्वंद्व है। Fifth Canto = Kunti-Karna dialogue. It features the conflict between a mother's love and Karna's dilemma regarding his duty towards his friend.

7. iii) ('रश्मि रथी' - अथवा) 'रश्मि रथी' खण्डकाव्य के आधार पर कुन्ती का चरित्र-चित्रण कीजिए।

**Solution:**

'रश्मि रथी' में कुन्ती एक विवश और ममतामयी माँ के रूप में चित्रित हैं। वे समाज के भय से अपने पुत्र कर्ण का त्याग कर देती हैं और जीवन भर इस पीड़ा से ग्रस्त रहती हैं। युद्ध के समय पुत्र-स्नेह से व्याकुल होकर वे कर्ण से मिलने जाती हैं, जो उनकी मातृत्व की प्रबलता को दर्शाता है। वे एक राजमाता हैं, किंतु उनका जीवन व्यक्तिगत दुःख और वेदना से भरा हुआ है। उनका चरित्र एक संघर्षशील, स्नेहमयी और दुखी माँ का है।

**Quick Tip**

कुन्ती का चरित्र-चित्रण = ममतामयी माँ + सामाजिक विवशता + जीवन भर का पश्चाताप।  
Character sketch of Kunti = A loving mother + Social helplessness + Lifelong repentance.

7. iv) ('आलोकवृत्त') 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के आधार पर नमक-सत्याग्रह का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

**Solution:**

'आलोकवृत्त' में नमक-सत्याग्रह का वर्णन बड़े ओजस्वी ढंग से किया गया है। गाँधीजी अंग्रेजों के नमक कानून को अन्यायपूर्ण मानते थे, क्योंकि नमक सभी के लिए आवश्यक है। इस कानून को तोड़ने के लिए, उन्होंने 1930 में साबरमती आश्रम से दांडी तक की ऐतिहासिक पदयात्रा की। उनके साथ हजारों देशवासी जुड़े। दांडी पहुँचकर उन्होंने समुद्र के पानी से नमक बनाकर इस काले कानून को तोड़ा, जिससे पूरे देश में सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत हुई।

**Quick Tip**

नमक-सत्याग्रह = दांडी यात्रा। प्रमुख बिंदु : साबरमती से दांडी, नमक कानून तोड़ना, सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत। Salt Satyagraha = Dandi March. Key points: Sabarmati to Dandi, breaking the salt law, beginning of the Civil Disobedience Movement.

7. iv) ('आलोकवृत्त' - अथवा) "जुड़ता जब सम्बन्ध हृदय का भेदभाव मिट जाता है। देश जाति रंगों से गहरा, मानवता का नाता है" ॥ कथन के आलोक में महात्मा गाँधी के चरित्र पर प्रकाश डालिए।

**Solution:**

यह कथन 'आलोकवृत्त' के नायक महात्मा गाँधी के चरित्र को सटीक रूप से दर्शाता है। गाँधीजी देश, जाति और रंग के भेदभाव से ऊपर उठकर संपूर्ण मानवता को प्रेम करते थे। उनके हृदय में सभी के लिए समान स्नेह था, चाहे वे किसी भी धर्म या जाति के हों। उन्होंने अछूतोंद्वारा, हिंदू-मुस्लिम एकता और विश्व-बंधुत्व के लिए कार्य किया। उनका मानना था कि सच्चा संबंध हृदय का होता है और मानवता का नाता ही सर्वोपरि है।

### Quick Tip

इस कथन से गाँधीजी का चरित्र-चित्रण = मानवतावादी + सर्वधर्म समभाव + भेदभाव के विरोधी। Character sketch of Gandhiji from this statement = Humanist + Equality of all religions + Opponent of discrimination.

7. v) ('त्यागपथी') 'त्यागपथी' खण्डकाव्य की प्रमुख घटनाओं का क्रमबद्ध उल्लेख कीजिए।

### Solution:

'त्यागपथी' की प्रमुख घटनाएँ क्रमबद्ध रूप से हैं: 1. राजकुमार हर्षवर्धन का आखेट से लौटना और पिता के रोग की सूचना पाना। 2. पिता की मृत्यु और माता का सती होना। 3. बड़े भाई राज्यवर्धन की शशांक द्वारा हत्या। 4. हर्षवर्धन का कन्नौज का राज्य संभालना। 5. अपनी बहन राज्यश्री को वन में आत्मदाह करने से बचाना। 6. अंत में, अपना संपूर्ण राज्य दान करके एक त्यागी सम्राट के रूप में प्रसिद्धि पाना।

### Quick Tip

'त्यागपथी' की घटनाओं का क्रम : पारिवारिक विपत्ति -> राज्य संभालना -> बहन को बचाना -> सर्वस्व त्याग। Sequence of events in 'Tyagpathi': Family calamity -> Taking over the kingdom -> Saving his sister -> Renouncing everything.

7. v) ('त्यागपथी' - अथवा) 'त्यागपथी' की प्रमुख नारी पात्र राज्यश्री की चरित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

### Solution:

'त्यागपथी' की प्रमुख नारी पात्र राज्यश्री एक आदर्श भारतीय नारी हैं। उनके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ हैं: वे त्याग और करुणा की प्रतिमूर्ति हैं, वे अत्यंत सहनशील हैं जिन्होंने पति की मृत्यु से लेकर अपहरण तक अनेक कष्ट सहे, वे अपने भाई हर्षवर्धन के प्रति असीम स्नेह रखती हैं, और वे एक कर्तव्यनिष्ठ शासिका भी हैं। उनका जीवन त्याग, सेवा और सहनशीलता का प्रतीक है।

### Quick Tip

राज्यश्री का चरित्र-चित्रण = त्याग + सहनशीलता + भ्रातृ-प्रेम + कर्तव्यनिष्ठा। Character sketch of Rajyashri = Sacrifice + Tolerance + Sibling love + Dutifulness.

7. vi) ('श्रवणकुमार') "'श्रवणकुमार' के चरित्र में देवोपम गुणों के साथ-साथ मानव सुलभ दुर्बलताएँ भी दिखायी गयी हैं।" इस कथन के सम्बन्ध में श्रवणकुमार का चरित्र-चित्रण कीजिए।

**Solution:**

श्रवणकुमार का चरित्र देवोपम गुणों से युक्त है। वे एक आदर्श पितृभक्त, सत्यवादी और क्षमाशील पुत्र हैं। किंतु, उनमें मानव सुलभ दुर्बलता भी है। जब दशरथ का बाण उन्हें लगता है, तो वे अपने अंधे माता-पिता के भविष्य की चिंता से व्याकुल हो जाते हैं। यह व्याकुलता उनकी मानवीय कमजोरी को दर्शाती है, जो उनके देवतुल्य चरित्र को और भी यथार्थ और मार्मिक बना देती है।

**Quick Tip**

श्रवणकुमार का चरित्र = देवोपम गुण (पितृभक्ति) + मानवीय दुर्बलता (माता-पिता की चिंता)।  
Character of Shrivankumar = God-like qualities (devotion to parents) + Human weakness (worry for parents).

**7. vi) ('श्रवणकुमार' - अथवा) 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य की कथावस्तु लिखिए।****Solution:**

'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य की कथावस्तु रामायण के एक प्रसंग पर आधारित है। श्रवणकुमार अपने अंधे माता-पिता की एकमात्र संतान है। वह उन्हें काँवर में बैठाकर तीर्थयात्रा पर ले जाता है। एक दिन अयोध्या के निकट वन में, जब वह अपने माता-पिता के लिए सरयू नदी से जल भर रहा होता है, तो राजा दशरथ शब्दभेदी बाण से उसे कोई जंगली पशु समझकर मार देते हैं। मरते समय श्रवण अपने माता-पिता के लिए दशरथ से जल ले जाने का अनुरोध करता है।

**Quick Tip**

श्रवणकुमार की कथावस्तु के मुख्य बिंदु : पितृभक्ति -> तीर्थयात्रा -> दशरथ द्वारा बाण चलाना -> श्रवण की मृत्यु। Main points of Shrivankumar's plot: Devotion to parents -> Pilgrimage -> Dasharatha shooting the arrow -> Shrivankumar's death.

**8. (क) (Passage 1) दिये गये संस्कृत गद्यांश का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिये :**

संस्कृत गद्यांश : इयमेव भाषा संस्कृतनाम्नापि लोके प्रथिता अस्ति। अस्माकं रामायण-महाभारताद्यैतिहासिक ग्रन्थाः, चत्वारो वेदाः, सर्वा उपनिषदः, अष्टादशपुराणानि, अन्यानि च महाकाव्य-नाट्यादीनि अस्यामेव भाषायां लिखितानि सन्ति। इयमेव भाषा सर्वसामार्यभाषाणां जननी मन्यते भाषातत्त्वविद्भिः।

**Correct Answer:**

सन्दर्भः प्रस्तुत संस्कृत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के 'संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्' नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद : यही भाषा संस्कृत नाम से भी संसार में प्रसिद्ध है। हमारे रामायण, महाभारत आदि ऐतिहासिक ग्रन्थ, चारों वेद, सभी उपनिषद्, अठारह पुराण तथा अन्य महाकाव्य, नाटक आदि इसी भाषा में लिखे हुए हैं। भाषा-वैज्ञानिकों द्वारा इसी भाषा को सभी आर्य भाषाओं की जननी माना जाता है।

## Solution:

### Step 1: Context (सन्दर्भ):

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के 'संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्' (संस्कृत भाषा का महत्त्व) नामक पाठ से लिया गया है। इस पाठ में संस्कृत भाषा की प्राचीनता, समृद्धि और महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है।

This prose passage is taken from the lesson titled 'Sanskritbhashayah Mahatvam' (The Importance of the Sanskrit Language) from our textbook 'Sanskrit Digdarshika'. This lesson highlights the antiquity, richness, and importance of the Sanskrit language.

### Step 2: Translation (अनुवाद):

इयमेव भाषा संस्कृतनाम्नापि लोके प्रथिता अस्ति। - यही भाषा संस्कृत नाम से भी संसार में प्रसिद्ध है।

अस्माकं रामायण-महाभारताद्यैतिहासिक ग्रन्थाः, चत्वारो वेदाः, सर्वा उपनिषदः, अष्टादशपुराणानि, अन्यानि च महाकाव्य-नाट्यादीनि अस्यामेव भाषायां लिखितानि सन्ति। - हमारे रामायण, महाभारत आदि ऐतिहासिक ग्रन्थ, चारों वेद, सभी उपनिषद्, अठारह पुराण तथा अन्य महाकाव्य, नाटक आदि इसी भाषा में लिखे हुए हैं।

इयमेव भाषा सर्वसामार्यभाषाणां जननी मन्यते भाषातत्त्वविद्भिः। - भाषा-वैज्ञानिकों द्वारा इसी भाषा को सभी आर्य भाषाओं की जननी माना जाता है।

**This very language is also famous in the world by the name of Sanskrit.**

**Our historical texts like Ramayana, Mahabharata etc., the four Vedas, all the Upanishads, the eighteen Puranas, and other epics, plays etc. are written in this very language.**

**This very language is considered the mother of all Aryan languages by linguists.**

### Quick Tip

अनुवाद करते समय संस्कृत के शब्दों का सही हिन्दी पर्याय चुनें। जैसे 'लोके' का अर्थ 'संसार में', 'प्रथिता' का 'प्रसिद्ध' और 'भाषातत्त्वविद्भिः' का 'भाषा-वैज्ञानिकों द्वारा'। सन्दर्भ में पाठ का नाम अवश्य लिखें। While translating, choose the correct Hindi equivalent for Sanskrit words. For example, 'loke' means 'in the world', 'prathita' means 'famous', and 'bhashatattvavidbhih' means 'by linguists'. Always mention the name of the lesson in the context.

8. (क) (Passage 2 - अथवा) दिये गये संस्कृत गद्यांश का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिये :

संस्कृत गद्यांश : बौद्ध युगे इमे सिद्धान्ताः वैयक्तिकजीवनस्य अभ्युत्थानाय प्रयुक्ता आसन्। परम् अद्य इमे सिद्धान्ताः राष्ट्राणां परस्पर मैत्री सहयोग-कारणानि, विश्व-बन्धुत्वस्य विश्वशान्तेश्च साधनानि सन्ति। राष्ट्रनायकस्य श्रीजवाहरलालनेहरू महोदयस्य प्रधानमन्त्रित्वकाले चीन देशेन सह भारतस्य मैत्री पञ्चशीलसिद्धान्तानधिकृत्य एवाभवत्। यतो हि उभावपि देशौ बौद्धधर्मे निष्ठावन्तौ। आधुनिके जगति पञ्चशीलसिद्धान्ताः नवीनं राजनैतिकं स्वरूपं गृहीतवन्तः।

**Correct Answer:**

**सन्दर्भ:** प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के 'पञ्चशीलसिद्धान्ताः' नामक पाठ से उद्धृत है।

**अनुवाद :** बौद्ध युग में ये सिद्धान्त व्यक्तिगत जीवन की उन्नति के लिए प्रयुक्त होते थे। परन्तु आज ये सिद्धान्त राष्ट्रों की आपसी मित्रता और सहयोग के कारण, विश्व-बंधुत्व और विश्व-शांति के साधन हैं। राष्ट्रनायक श्री जवाहरलाल नेहरू महोदय के प्रधानमंत्रित्व काल में चीन देश के साथ भारत की मित्रता पंचशील सिद्धान्तों के आधार पर ही हुई थी। क्योंकि दोनों ही देश बौद्ध धर्म में निष्ठा रखने वाले हैं। आधुनिक संसार में पंचशील सिद्धान्तों ने नया राजनीतिक स्वरूप ग्रहण कर लिया है।

### **Solution:**

#### **Step 1: Context (सन्दर्भ):**

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के 'पञ्चशीलसिद्धान्ताः' (पंचशील के सिद्धान्त) नामक पाठ से लिया गया है। इस पाठ में पंचशील के सिद्धान्तों की प्राचीनता और आधुनिक युग में उनकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला गया है।

This prose passage is taken from the lesson titled 'Panchsheelsiddhantah' (The Principles of Panchsheel) from our textbook 'Sanskrit Digdarshika'. This lesson highlights the antiquity of the principles of Panchsheel and their relevance in the modern era.

#### **Step 2: Translation (अनुवाद):**

बौद्ध युगे इमे सिद्धान्ताः वैयक्तिकजीवनस्य अभ्युत्थानाय प्रयुक्ता आसन्। - बौद्ध युग में ये सिद्धान्त व्यक्तिगत जीवन की उन्नति के लिए प्रयुक्त होते थे।

परम् अद्य इमे सिद्धान्ताः राष्ट्रानां परस्पर मैत्री सहयोग-कारणानि, विश्व-बन्धुत्वस्य विश्वशान्ते-श्च साधनानि सन्ति। - परन्तु आज ये सिद्धान्त राष्ट्रों की आपसी मित्रता और सहयोग के कारण, विश्व-बंधुत्व और विश्व-शांति के साधन हैं।

राष्ट्रनायकस्य श्रीजवाहरलालनेहरू महोदयस्य प्रधानमन्त्रित्वकाले चीन देशेन सह भारतस्य मै-त्री पञ्चशीलसिद्धान्तानधिकृत्य एवाभवत्। - राष्ट्रनायक श्री जवाहरलाल नेहरू महोदय के प्र-धानमंत्रित्व काल में चीन देश के साथ भारत की मित्रता पंचशील सिद्धान्तों के आधार पर ही हुई थी।

यतो हि उभावपि देशौ बौद्धधर्मे निष्ठावन्तौ। - क्योंकि दोनों ही देश बौद्ध धर्म में निष्ठा रखने वाले हैं।  
आधुनिके जगति पञ्चशीलसिद्धान्ताः नवीनं राजनैतिकं स्वरूपं गृहीतवन्तः। - आधुनिक संसार में पं-चशील सिद्धान्तों ने नया राजनीतिक स्वरूप ग्रहण कर लिया है।

**In the Buddhist era, these principles were used for the upliftment of individual life.**

**But today, these principles are the reasons for mutual friendship and cooperation among nations, and are the means for world brotherhood and world peace.**

**During the prime ministership of the national leader, Mr. Jawaharlal Nehru, India's friendship with China was based on the principles of Panchsheel.**

**Because both countries are followers of Buddhism.**

**In the modern world, the principles of Panchsheel have taken on a new political form.**

## Quick Tip

लंबे वाक्यों को छोटे-छोटे हिस्सों में तोड़कर अनुवाद करें। जैसे 'राष्ट्रनायकस्य...एवाभवत्' को पहले 'राष्ट्रनायक श्री जवाहरलाल नेहरू के समय में', फिर 'चीन के साथ भारत की मैत्री', और अंत में 'पंचशील सिद्धान्तों पर हुई' में तोड़ें। Translate long sentences by breaking them into smaller parts. For example, break down 'Rashtranayakasya...evabhavat' first into 'During the time of national leader Shri Jawaharlal Nehru', then 'India's friendship with China', and finally 'was based on the principles of Panchsheel'.

### 8. (ख) (Verse 1) दिये गये श्लोक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

संस्कृत श्लोक :

प्रीणाति यः सुचरितैः पितरं स पुत्रो  
यद् भर्तुरिव हितमिच्छति तत् कलत्रम् ।  
तन्मित्रमापदि सुखे च समकिरणं यद्  
एतत्त्रयं जगति पुण्यकृतो लभन्ते ॥

#### Correct Answer:

सन्दर्भ: प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्यपुस्तक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के 'सुभाषितरत्नानि' नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद : जो अपने अच्छे चरित्र से पिता को प्रसन्न करे, वही पुत्र है। जो सदा पति का ही हित चाहे, वही पत्नी है। जो विपत्ति और सुख में समान व्यवहार करे, वही मित्र है। संसार में ये तीनों भाग्यशाली लोगों को ही मिलते हैं।

#### Solution:

##### Step 1: Context (सन्दर्भ):

प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्यपुस्तक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के 'सुभाषितरत्नानि' (सुंदर कथनों के रत्न) नामक पाठ से लिया गया है। इस पाठ में जीवन के लिए उपयोगी नैतिक और सुंदर विचारों को श्लोकों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

This verse is taken from the lesson titled 'Subhashitaratnani' (Gems of Beautiful Sayings) from our textbook 'Sanskrit Digdarsnika'. In this lesson, useful moral and beautiful thoughts for life are presented through verses.

##### Step 2: Translation (अनुवाद):

इस श्लोक में संसार की तीन दुर्लभ और उत्तम वस्तुओं का वर्णन है।

जो अपने अच्छे आचरण (सुचरितैः) से पिता को प्रसन्न (प्रीणाति) करता है, वही (सच्चा) पुत्र है। जो केवल (एव) पति (भर्तुः) का ही हित (हितम्) चाहती (इच्छति) है, वही (सच्ची) पत्नी (कलत्रम्) है।

जो विपत्ति (आपदि) और सुख (सुखे) में समान व्यवहार (समकिरणं) वाला हो, वही (सच्चा) मित्र है। संसार (जगति) में ये तीनों (एतत्त्रयं) पुण्यशाली (पुण्यकृतो) लोगों को ही प्राप्त होते (लभन्ते) हैं।

This verse describes three rare and excellent things in the world.

He who pleases (prīṇāti) his father with good conduct (sucharitaiḥ) is a (true) son.

She who desires (ichchhati) only (eva) the welfare (hitam) of her husband (bhartuḥ) is a (true) wife (kalatram).

One who behaves equally (samakriyam) in adversity (āpadi) and happiness (sukhe) is a (true) friend.

These three (etattrayam) are obtained (labhante) in the world (jagatī) only by the fortunate/virtuous (punyakṛto).

### Quick Tip

'सुभाषित' का अर्थ ही है 'सुंदर कथन'। इन श्लोकों में जीवन का सार होता है। अनुवाद करते समय भाव को पकड़ना महत्वपूर्ण है, केवल शाब्दिक अनुवाद पर्याप्त नहीं है। The very meaning of 'Subhashit' is 'beautiful saying'. These verses contain the essence of life. It is important to capture the spirit while translating, not just the literal meaning.

8. (ख) (Verse 2 - अथवा) दिये गये श्लोक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

संस्कृत श्लोक :

भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती ।  
तस्या हि मधुरं काव्यं तस्मादपि सुभाषितम् ॥

**Correct Answer:**

**सन्दर्भ:** प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्यपुस्तक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के 'सुभाषितरत्नानि' नामक पाठ से उद्धृत है।

**अनुवाद :** भाषाओं में मुख्य, मधुर और अलौकिक देववाणी संस्कृत है। निश्चय ही, उससे भी मधुर उसका काव्य है और उस काव्य से भी मधुर उसके सुभाषित (सुंदर वचन) हैं।

**Solution:**

**Step 1: Context (सन्दर्भ):**

प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्यपुस्तक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के 'सुभाषितरत्नानि' (सुंदर कथनों के रत्न) नामक पाठ से लिया गया है। इस श्लोक में संस्कृत भाषा की महिमा का वर्णन किया गया है।

This verse is taken from the lesson titled 'Subhashitaratnani' (Gems of Beautiful Sayings) from our textbook 'Sanskrit Digdarshika'. This verse describes the glory of the Sanskrit language.

**Step 2: Translation (अनुवाद):**

भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती । - (सभी) भाषाओं में देववाणी संस्कृत (गीर्वाणभारती) मुख्य, मधुर और अलौकिक (दिव्या) है।

तस्या हि मधुरं काव्यं - निश्चय ही (हि), उससे भी मधुर उसका काव्य है।

तस्मादपि सुभाषितम् ॥ - और उससे (काव्य से) भी अधिक मधुर उसके सुभाषित (सुंदर वचन या सूक्तियाँ) हैं।

Among languages, the divine language of the gods, Sanskrit (Gīrvāṇabhārātī), is the principal, sweet, and celestial one.

Indeed (hi), sweeter than it is its poetry.

And even sweeter than that (poetry) are its beautiful sayings (subhāṣitam).

### Quick Tip

श्लोक में श्रेष्ठता का क्रम बताया गया है : भाषाएँ < संस्कृत < संस्कृत काव्य < संस्कृत सु-भाषित। इस क्रम को ध्यान में रखने से अनुवाद स्पष्ट हो जाता है। The verse describes a hierarchy of excellence: Languages < Sanskrit < Sanskrit Poetry < Sanskrit Subhashit. Keeping this hierarchy in mind makes the translation clear.

9. निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

i) हाथ-पाँव मारना

**Correct Answer:** अर्थ: बहुत प्रयत्न करना। वाक्य प्रयोग : नौकरी पाने के लिए रमेश ने बहुत हाथ-पाँव मारे, तब जाकर उसे सफलता मिली।

ii) अगर-मगर करना

**Correct Answer:** अर्थ: टाल-मटोल करना या बहाने बनाना। वाक्य प्रयोग : जब मैंने मोहन से अपनी किताब माँगी, तो वह अगर-मगर करने लगा।

iii) अधजल गगरी छलकत जाय

**Correct Answer:** अर्थ: कम ज्ञान या गुण वाला व्यक्ति दिखावा अधिक करता है। वाक्य प्रयोग : राम ने अभी-अभी थोड़ी अंग्रेजी सीखी है और हर किसी से अंग्रेजी में ही बात करता है, सच है, अधजल गगरी छलकत जाय।

iv) बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद

**Correct Answer:** अर्थ: मूर्ख व्यक्ति गुणवान वस्तु का महत्व नहीं समझता। वाक्य प्रयोग : मैंने उसे शास्त्रीय संगीत सुनाया तो वह बोर होने लगा, सच ही है, बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद।

**Solution:**

**Step 1: Understanding the Idiom/Proverb:**

प्रत्येक मुहावरे या लोकोक्ति का एक लाक्षणिक अर्थ होता है जो उसके शाब्दिक अर्थ से भिन्न होता है। इस अर्थ को समझना पहला चरण है।

Each idiom or proverb has a figurative meaning that is different from its literal meaning. Understanding this meaning is the first step.

**Step 2: Forming a Sentence:**

वाक्य प्रयोग ऐसा होना चाहिए जिससे मुहावरे/लोकोक्ति का अर्थ स्पष्ट हो जाए। वाक्य को स्वाभाविक और प्रासंगिक रखना चाहिए।

The sentence should be such that the meaning of the idiom/proverb becomes clear. The sentence should be natural and relevant.

- हाथ-पाँव मारना (बहुत प्रयत्न करना): पुलिस से बचने के लिए चोर ने बहुत हाथ-पाँव मारे पर पकड़ा गया।
- अगर्-मगर् करना (टाल-मटोल करना): काम करने को कहो तो आलसी नौकर हमेशा अगर्-मगर् करता है।
- अधजल गगरी छलकत जाय (अधूरा ज्ञान होने पर अधिक दिखावा करना): थोड़ा धन आते ही वह बड़ी-बड़ी बातें करने लगा है, इसी को कहते हैं अधजल गगरी छलकत जाय।
- बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद (अज्ञानी व्यक्ति गुणों का महत्व नहीं समझता): अनपढ़ व्यक्ति के सामने अच्छी कविता पढ़ने का क्या लाभ, आखिर बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद।

### Quick Tip

वाक्य प्रयोग करते समय, मुहावरे का प्रयोग वाक्य के अंग के रूप में करें, जबकि लोकोक्ति का प्रयोग अक्सर एक पूरी बात कहने के बाद उदाहरण या निष्कर्ष के रूप में होता है। When using in a sentence, use an idiom as part of the sentence, whereas a proverb is often used as an example or conclusion after making a full statement.

## 10. अपठित गद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

गद्यांश : संस्कृत में एक सूत्रवाक्य है, 'गहना कर्मणो गतिः' अर्थात् कर्मों की गति अत्यन्त गूढ़ और न्यारी है। कर्म सिद्धान्त के अनुसार, कुछ कर्मों को बदला जा सकता है, लेकिन कुछ कर्म नहीं बदले जा सकते। दूध से दही बनता है, उसे खट्टा या मीठा बनाया जा सकता है, लेकिन दही को वापस दूध में बदल नहीं सकते। जो कर्म प्रकट हो रहा है और जिसका प्रभाव दिखना शुरू हो गया है, वह प्रारब्ध कर्म है। आप प्रारब्ध कर्म को बदल नहीं सकते क्योंकि यह वर्तमान में घटित होने लगा है। संचित कर्म अतीत के कर्मों का परिणाम है। यह मन के भीतर अव्यक्त प्रवृत्तियों के रूप में बना रहता है। संचित कर्मों को आध्यात्मिक अभ्यास द्वारा उनके अभिव्यक्त होने के पहले ठीक किया जा सकता है। हमारे द्वारा किये गये कृत्यों के भविष्य में होनेवाले परिणाम आगामी कर्म कहे जाते हैं।

i) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

Correct Answer: कर्म सिद्धान्त (या) कर्मों की गति। Solution:

### Step 1: Identifying the Central Idea:

यह पूरा गद्यांश 'कर्म' और उसके विभिन्न रूपों (प्रारब्ध, संचित, आगामी) की व्याख्या कर रहा है। गद्यांश की शुरुआत ही 'गहना कर्मणो गतिः' से होती है। इसलिए, इसका सबसे उपयुक्त शीर्षक 'कर्म सिद्धान्त' या 'कर्मों की गति' होगा।

This entire passage explains 'Karma' and its various forms (Prarabdha, Sanchita, Agami). The passage itself begins with 'Gahana Karmano Gatih'. Therefore, its most appropriate title would be 'Karma Siddhant' (The Principle of Karma) or 'Karmon ki Gati' (The Motion of Karma).

### Quick Tip

अपठित गद्यांश के प्रश्नों का उत्तर देते समय, उत्तरों को सीधे गद्यांश से ही लेना चाहिए। अपने पूर्व ज्ञान को जोड़ने से बचें जब तक कि व्याख्या करने के लिए न कहा जाए। When answering questions from an unseen passage, the answers should be taken directly from the passage. Avoid adding your prior knowledge unless asked to explain or interpret.

ii) प्रारब्ध कर्म किसे कहा गया है ?

**Correct Answer:** जो कर्म प्रकट हो रहा है और जिसका प्रभाव दिखना शुरू हो गया है, उसे प्रारब्ध कर्म कहा गया है। इसे बदला नहीं जा सकता। **Solution:**

**Step 1: Locating the Definition in the Passage:**

गद्यांश में स्पष्ट रूप से लिखा है : "जो कर्म प्रकट हो रहा है और जिसका प्रभाव दिखना शुरू हो गया है, वह प्रारब्ध कर्म है। आप प्रारब्ध कर्म को बदल नहीं सकते क्योंकि यह वर्तमान में घटित होने लगा है।"

The passage clearly states: "The karma that is manifesting and whose effect has started to show is Prarabdha Karma. You cannot change Prarabdha Karma because it has started to happen in the present."

### Quick Tip

अपठित गद्यांश के प्रश्नों का उत्तर देते समय, उत्तरों को सीधे गद्यांश से ही लेना चाहिए। अपने पूर्व ज्ञान को जोड़ने से बचें जब तक कि व्याख्या करने के लिए न कहा जाए। When answering questions from an unseen passage, the answers should be taken directly from the passage. Avoid adding your prior knowledge unless asked to explain or interpret.

iii) लेखक के अनुसार कर्म सिद्धान्त को स्पष्ट कीजिए।

**Correct Answer:** लेखक के अनुसार, कर्म सिद्धान्त यह है कि कर्मों की गति बहुत गूढ़ होती है। कर्म तीन

प्रकार के होते हैं: प्रारब्ध, संचित और आगामी। प्रारब्ध कर्म (जो वर्तमान में फल दे रहे हैं) को बदला नहीं जा सकता, लेकिन संचित कर्म (अतीत के कर्म जो अभी अव्यक्त हैं) को आध्यात्मिक अभ्यास से बदला जा सकता है। हमारे वर्तमान कर्म भविष्य के परिणाम (आगामी कर्म) तय करते हैं। **Solution:**

**Step 1: Synthesizing Information from the Passage:**

लेखक के अनुसार कर्म सिद्धान्त इस प्रकार है :

1. कर्मों की गति गूढ़ है : कर्मों का कार्य करने का तरीका बहुत जटिल और रहस्यमयी है।

## 2. कर्मों के प्रकार : कर्म तीन प्रकार के होते हैं -

- **प्रारब्ध कर्म:** वे कर्म जिनका फल वर्तमान में मिलना शुरू हो गया है। इन्हें बदला नहीं जा सकता, जैसे दूध से बने दही को वापस दूध नहीं बनाया जा सकता।
- **संचित कर्म:** अतीत में किए गए वे कर्म जो अभी मन में अव्यक्त प्रवृत्तियों के रूप में हैं। इन्हें आध्यात्मिक अभ्यास से फल देने से पहले बदला या ठीक किया जा सकता है।
- **आगामी कर्म:** वर्तमान में किए गए कर्मों का भविष्य में मिलने वाला परिणाम।

According to the author, the principle of Karma is as follows:

1. **The way of karma is profound:** The way karmas function is very complex and mysterious.

2. **Types of Karma:** There are three types of karma -

- **Prarabdha Karma:** Those actions whose fruits have started to manifest in the present. They cannot be changed, just as curd made from milk cannot be turned back into milk.
- **Sanchita Karma:** Those actions done in the past which are still in the mind as unmanifested tendencies. They can be changed or corrected by spiritual practice before they bear fruit.
- **Agami Karma:** The future results of actions performed in the present.

### Quick Tip

अपठित गद्यांश के प्रश्नों का उत्तर देते समय, उत्तरों को सीधे गद्यांश से ही लेना चाहिए। अपने पूर्व ज्ञान को जोड़ने से बचें जब तक कि व्याख्या करने के लिए न कहा जाए। When answering questions from an unseen passage, the answers should be taken directly from the passage. Avoid adding your prior knowledge unless asked to explain or interpret.

10. (- अथवा) अपठित गद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

गद्यांश : विषमता शोषण की जननी है। समाज में जितनी विषमता होगी, सामान्यतः शोषण उतना ही अधिक होगा। स्वतन्त्रता प्राप्ति के 77 वर्षों बाद भी हमारे देश में सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक असमानता अधिक है जिसके कारण एक व्यक्ति एक स्थान पर शोषक तथा वही व्यक्ति दूसरे स्थान पर शोषित होता है। उपभोक्ता संरक्षण के सन्दर्भ में उपभोक्ता उस व्यक्ति या व्यक्ति समूह को कहा जाता है जो सीधे तौर पर किन्हीं भी वस्तुओं अथवा सेवाओं का उपयोग करते हैं। इस प्रकार सभी व्यक्ति कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में शोषण का शिकार होते हैं।

i) उपर्युक्त गद्यांश का समुचित शीर्षक लिखिए।

**Correct Answer:** विषमता और शोषण (या) शोषण का मूल कारण। **Solution:**

**Step 1: Identifying the Central Idea:**

गद्यांश की पहली पंक्ति "विषमता शोषण की जननी है" ही इसका केंद्रीय भाव स्पष्ट कर देती है। पूरा गद्यांश इसी बात की व्याख्या करता है कि कैसे विभिन्न प्रकार की असमानताएँ (विषमता) शोषण को

जन्म देती हैं। इसलिए 'विषमता और शोषण' एक उपयुक्त शीर्षक है।

The first line of the passage, "Inequality is the mother of exploitation," clarifies its central idea. The entire passage explains how various types of inequality lead to exploitation. Therefore, 'Inequality and Exploitation' is an appropriate title.

ii) उपभोक्ता किसे कहा जाता है ?

**Correct Answer:** उपभोक्ता उस व्यक्ति या व्यक्ति समूह को कहा जाता है जो सीधे तौर पर किन्हीं भी वस्तुओं अथवा सेवाओं का उपयोग करते हैं। **Solution:**

**Step 1: Locating the Definition in the Passage:**

गद्यांश में उपभोक्ता की परिभाषा स्पष्ट रूप से दी गई है : "उपभोक्ता संरक्षण के सन्दर्भ में उपभोक्ता उस व्यक्ति या व्यक्ति समूह को कहा जाता है जो सीधे तौर पर किन्हीं भी वस्तुओं अथवा सेवाओं का उपयोग करते हैं।"

The definition of a consumer is clearly given in the passage: "In the context of consumer protection, a consumer is that person or group of persons who directly use any goods or services."

iii) उपभोक्ता का शोषण क्यों होता है ?

**Correct Answer:** गद्यांश के अनुसार, उपभोक्ता का शोषण समाज में व्याप्त सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक विषमता (असमानता) के कारण होता है। **Solution:**

**Step 1: Finding the Reason from the Passage:**

गद्यांश की पहली ही पंक्ति में शोषण का मूल कारण बताया गया है : "विषमता शोषण की जननी है।" आगे इसे और स्पष्ट किया गया है कि "हमारे देश में सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक असमानता अधिक है" और इसी के कारण शोषण होता है। उपभोक्ता भी समाज का हिस्सा है, इसलिए उसके शोषण का मूल कारण भी यही विषमता है।

The root cause of exploitation is mentioned in the very first line of the passage: "Inequality is the mother of exploitation." It is further clarified that "in our country, social, economic, educational, and cultural inequality is high," and exploitation happens because of this. A consumer is also a part of society, so the root cause of their exploitation is also this inequality.

#### Quick Tip

जब भी अपठित गद्यांश से उत्तर दें, तो कोशिश करें कि आपके उत्तर में गद्यांश में प्रयुक्त प्रमुख शब्द (जैसे यहाँ 'विषमता', 'असमानता') शामिल हों। इससे परीक्षक को पता चलता है कि आपने उत्तर गद्यांश से ही लिया है। Whenever you answer from an unseen passage, try to include the key terms used in the passage (like 'vishamata', 'asamanata' here) in your answer. This shows the examiner that you have derived the answer from the passage itself.

11. (क) i) निम्नलिखित शब्द-युग्म 'श्रवण-श्रमण' का सही अर्थ चयन करके लिखिए :

- (अ) मेहनत और सुनना  
(ब) सावन और कान  
(स) सज्जन और दुर्जन  
(द) कान और भिक्षु

**Correct Answer:** (द) कान और भिक्षु

**Solution:**

**Step 1: Analyzing the words:**

**श्रवण (Shravan):** इस शब्द का अर्थ है 'सुनना' या सुनने की क्रिया। इसका एक और अर्थ 'कान' भी होता है, जो सुनने का अंग है।

**श्रमण (Shraman):** इस शब्द का अर्थ है 'भिक्षु', विशेषकर बौद्ध या जैन संन्यासी जो भिक्षा मांगकर जीवनयापन करते हैं।

**Shravan:** This word means 'to listen' or the act of listening. Another meaning is also 'ear', the organ of hearing.

**Shraman:** This word means 'monk' or 'ascetic', especially a Buddhist or Jain monk who lives by begging for alms.

**Step 2: Matching with Options:**

दिए गए विकल्पों में, (द) 'कान और भिक्षु' इन दोनों शब्दों के सही अर्थ को क्रमशः प्रस्तुत करता है।

Among the given options, (द) 'कान और भिक्षु' (Ear and Monk) correctly represents the meaning of both words respectively.

### Quick Tip

शब्द-युग्म (होमोनिम) में अक्सर उच्चारण में थोड़ी समानता होती है लेकिन अर्थ बिल्कुल भिन्न होते हैं। दोनों शब्दों के अर्थों को ध्यान से सोचें। 'श्रमण' शब्द 'श्रम' (मेहनत) से भ्रमित कर सकता है, लेकिन इसका सही अर्थ 'संन्यासी' या 'भिक्षु' है। In homonyms (शब्द-युग्म), there is often a slight similarity in pronunciation but the meanings are completely different. Think carefully about the meaning of both words. The word 'Shraman' can be confusing with 'shram' (labor), but its correct meaning is 'ascetic' or 'monk'.

11. (क) ii) निम्नलिखित शब्द-युग्म 'भित्ति-भीत' का सही अर्थ चयन करके लिखिए :

- (अ) भीतर और बाहर  
(ब) दीवार और डरा हुआ  
(स) भक्ति और भाग्य  
(द) डरपोक और दीवार

**Correct Answer:** (ब) दीवार और डरा हुआ

**Solution:**

### Step 1: Analyzing the words:

**भित्ति (Bhitti):** इस शब्द का अर्थ है 'दीवार'। उदाहरण : भित्ति-चित्र (mural painting on a wall)।

**भीत (Bheet):** इस शब्द का अर्थ है 'डरा हुआ' या 'भयभीत'।

**Bhitti:** This word means 'wall'. Example: Bhitti-chitra (mural painting on a wall).

**Bheet:** This word means 'afraid' or 'frightened'.

### Step 2: Matching with Options:

दिए गए विकल्पों में, (ब) 'दीवार और डरा हुआ' इन दोनों शब्दों के सही अर्थ को क्रमशः प्रस्तुत करता है। विकल्प (द) में क्रम उल्टा है, इसलिए वह गलत है।

Among the given options, (ब) 'दीवार और डरा हुआ' (Wall and afraid) correctly represents the meaning of both words respectively. In option (द), the order is reversed, so it is incorrect.

#### Quick Tip

शब्द-युग्मों में शब्दों का क्रम बहुत महत्वपूर्ण होता है। सुनिश्चित करें कि आपके द्वारा चुना गया विकल्प सही क्रम में अर्थ दे रहा हो। The order of words in homonyms is very important. Make sure the option you choose provides the meanings in the correct order.

11. (ख) निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो सही अर्थ लिखिए :

(i) कर (ii) पुष्कर (iii) विधि (iv) अर्थ

#### Correct Answer:

(i) कर : हाथ, टैक्स (राजस्व)

(ii) पुष्कर : तालाब, कमल, एक तीर्थ स्थान

(iii) विधि : तरीका (रीति), कानून, भाग्य (विधाता)

(iv) अर्थ: मतलब (अभिप्राय), धन (संपत्ति)

(नोट : परीक्षार्थी को किसी एक का उत्तर देना है।)

#### Solution:

##### Step 1: Understanding Anekarthi Shabd (अनेकार्थी शब्द):

अनेकार्थी शब्द वे शब्द होते हैं जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं। प्रश्न में दिए गए प्रत्येक शब्द के कई अर्थ हैं।

Anekarthi shabd are words that have more than one meaning. Each word given in the question has multiple meanings.

##### Step 2: Providing Two Meanings for Each Word:

###### • कर (Kar):

1. हाथ : जैसे, 'करकमल' (कमल जैसे हाथ)।

2. टैक्स : जैसे, 'आयकर' (income tax)।

3. सूँड़ : जैसे, हाथी का 'कर'।

• पुष्कर (Pushkar):

1. तालाब/सरोवर :
2. कमल का फूल :
3. एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान : (राजस्थान में)।

• विधि (Vidhi):

1. तरीका/प्रणाली : जैसे, 'कार्य करने की विधि'।
2. कानून : जैसे, 'विधि का शासन'।
3. भाग्य/नियति : जैसे, 'विधि का विधान'।

• अर्थ (Arth):

1. मतलब/अभिप्राय : जैसे, 'इस शब्द का क्या अर्थ है?'।
2. धन/संपत्ति: जैसे, 'अर्थव्यवस्था' (economy)।
3. प्रयोजन/हेतु : जैसे, 'किस अर्थ से आए हो?'।

Quick Tip

अनेकार्थी शब्दों की तैयारी के लिए, सामान्यतः प्रयोग होने वाले शब्दों जैसे 'अंबर', 'अक्षर', 'अर्क', 'कर', 'काल', 'पत्र', 'हरि' आदि के विभिन्न अर्थों को याद करें। To prepare for Anekarthi shabd, memorize the different meanings of commonly used words like 'ambar', 'akshar', 'ark', 'kar', 'kaal', 'patra', 'hari', etc.

11. (ग) i) निम्नलिखित वाक्यांश 'जो एक दूसरे पर आश्रित हो' के लिए एक सही शब्द का चयन करके लिखिए :

- (अ) पराश्रयी
- (ब) अन्योन्याश्रित
- (स) पराग्रही
- (द) अपराश्रित

**Correct Answer:** (ब) अन्योन्याश्रित

**Solution:**

**Step 1: Analyzing the Phrase:**

वाक्यांश है "जो एक दूसरे पर आश्रित हो"। यहाँ 'एक दूसरे पर' (mutually) महत्वपूर्ण है।

The phrase is "jo ek doosre par aashrit ho" (one who is dependent on each other). Here, 'ek doosre par' (mutually) is important.

**Step 2: Analyzing the Options:**

- **पराश्रयी (Parashrayi):** इसका अर्थ है 'जो दूसरों पर आश्रित हो' (dependent on others)। यह पारस्परिक निर्भरता नहीं दिखाता।
- **अन्योन्याश्रित (Anyonyashrit):** यह 'अन्योन्य' (आपस में/एक दूसरे पर) और 'आश्रित' से बना है। इसका सटीक अर्थ है 'जो एक दूसरे पर आश्रित हो' (mutually dependent)।
- **पराग्रही (Paragrahi):** इसका अर्थ है दूसरों की बात मानने वाला।
- **अपराश्रित (Aparashrit):** इसका अर्थ है जो दूसरों पर आश्रित न हो।

### Step 3: Conclusion:

अतः, वाक्यांश के लिए सबसे सही शब्द 'अन्योन्याश्रित' है।

Thus, the most correct word for the phrase is 'Anyonyashrit'.

### Quick Tip

'अन्योन्य' शब्द का अर्थ ही 'आपसी' या 'पारस्परिक' (mutual/reciprocal) होता है। इसे याद रखने से आप 'अन्योन्याश्रित', 'अन्योन्य क्रिया' जैसे शब्दों का अर्थ आसानी से समझ सकते हैं। The word 'anyony' itself means 'mutual' or 'reciprocal'. Remembering this will help you easily understand the meaning of words like 'anyonyashrit' (mutually dependent), 'anyony kriya' (mutual action), etc.

11. (ग) ii) निम्नलिखित वाक्यांश 'किसी वस्तु को प्राप्त करने की उत्कट इच्छा' के लिए एक सही शब्द का चयन करके लिखिए :

- (अ) अभिलाषा
- (ब) प्रतीक्षा
- (स) महत्त्वाकांक्षा
- (द) आकांक्षी

**Correct Answer:** (अ) अभिलाषा

### Solution:

#### Step 1: Analyzing the Phrase:

वाक्यांश है "किसी वस्तु को प्राप्त करने की उत्कट इच्छा"। यहाँ 'उत्कट' (intense/keen) शब्द महत्वपूर्ण है।

The phrase is "kisi vastu ko prapt karne ki utkat ichchha" (a keen desire to obtain something). Here the word 'utkat' (intense/keen) is important.

#### Step 2: Analyzing the Options:

- **अभिलाषा (Abhilasha):** इसका अर्थ है तीव्र इच्छा या कामना। यह वाक्यांश के अर्थ के सबसे निकट है।
- **प्रतीक्षा (Pratiksha):** इसका अर्थ है इंतज़ार।

- **महत्त्वाकांक्षा (Mahatvakanksha):** इसका अर्थ है महान बनने की या कुछ बड़ा हासिल करने की इच्छा (ambition), जो किसी सामान्य 'वस्तु' की इच्छा से अधिक व्यापक है।
- **आकांक्षी (Akankshi):** इसका अर्थ है आकांक्षा या इच्छा रखने वाला (one who desires)। यह इच्छा का नाम नहीं, बल्कि इच्छुक व्यक्ति का विशेषण है।

### Step 3: Conclusion:

किसी भी वस्तु को पाने की तीव्र इच्छा के लिए सबसे उपयुक्त शब्द 'अभिलाषा' है।  
The most suitable word for the keen desire to obtain any object is 'Abhilasha'.

### Quick Tip

इच्छा से संबंधित शब्दों के सूक्ष्म अंतर को समझें: इच्छा (सामान्य), अभिलाषा (तीव्र), महत्त्वाकांक्षा (बड़ा लक्ष्य), आकांक्षा (चाह)। 'आकांक्षी' विशेषण है, संज्ञा नहीं। Understand the subtle differences between words related to desire: Ichchha (general), Abhilasha (intense), Mahatvakanksha (great goal/ambition), Akanksha (aspiration). 'Akankshi' is an adjective, not a noun.

## 11. (घ) निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

- प्रगल्भराज का भविष्य उज्ज्वल हो।
- सज्जन पुरुष सब का भला चाहते हैं।
- कृपया एक ठण्डा गिलास पानी लाइए।
- उसने मेरे को पचास रुपया दिया।

### Correct Answer:

- प्रगल्भराज का भविष्य उज्ज्वल हो।
  - सज्जन सबका भला चाहते हैं।
  - कृपया एक गिलास ठंडा पानी लाइए।
  - उसने मुझे पचास रुपये दिए।
- (नोट : परीक्षार्थी को कोई दो करने हैं।)

### Solution:

#### Step 1: Identifying Errors and Correcting them:

#### 1. वाक्य (i): प्रगल्भराज का भविष्य उज्ज्वल हो।

- **अशुद्धि :** वर्तनी की अशुद्धि। 'उज्ज्वल' शब्द गलत लिखा है।
- **शुद्ध रूप :** 'उज्ज्वल' (इसमें दो आधे 'ज' होते हैं)।
- **शुद्ध वाक्य :** प्रगल्भराज का भविष्य उज्ज्वल हो।

#### 2. वाक्य (ii): सज्जन पुरुष सब का भला चाहते हैं।

- अशुद्धि : पुनरुक्ति दोष। 'सज्जन' का अर्थ ही है 'सत्' (अच्छा) 'जन' (पुरुष/व्यक्ति)। अतः 'पुरुष' शब्द अनावश्यक है।
- शुद्ध रूप : 'सज्जन' के साथ 'पुरुष' नहीं लगाना चाहिए।
- शुद्ध वाक्य : सज्जन सबका भला चाहते हैं।

### 3. वाक्य (iii): कृपया एक ठण्डा गिलास पानी लाइए।

- अशुद्धि : पदक्रम की अशुद्धि। विशेषण 'ठण्डा' गिलास के लिए नहीं, बल्कि पानी के लिए है।
- शुद्ध रूप : 'ठंडा' शब्द को 'पानी' से पहले रखना चाहिए।
- शुद्ध वाक्य : कृपया एक गिलास ठंडा पानी लाइए।

### 4. वाक्य (iv): उसने मेरे को पचास रुपया दिया।

- अशुद्धि : सर्वनाम और वचन संबंधी अशुद्धि। 'मेरे को' हिन्दी का मानक रूप नहीं है। 'पचास' के साथ 'रुपया' (एकवचन) गलत है।
- शुद्ध रूप : 'मेरे को' की जगह 'मुझे' और 'रुपया' की जगह 'रुपये' (बहुवचन) होना चाहिए। 'दिया' की जगह 'दिए' होगा।
- शुद्ध वाक्य : उसने मुझे पचास रुपये दिए।

#### Quick Tip

वाक्य शुद्धि के लिए सामान्य अशुद्धियों पर ध्यान दें: वर्तनी (जैसे उज्ज्वल), पुनरुक्ति (सज्जन पुरुष), पदक्रम (विशेषण का स्थान), और व्याकरण (कारक, वचन, लिंग)। For sentence correction, focus on common errors: spelling (like ujjwal), repetition (sajjan purush), word order (position of adjective), and grammar (case, number, gender).

### 12. (क) 'वीर' रस अथवा 'करुण' रस का लक्षण सहित एक उदाहरण लिखिए।

#### Solution:

#### वीर रस

#### Step 1: Definition (लक्षण):

युद्ध अथवा किसी कठिन कार्य को करने के लिए हृदय में जो 'उत्साह' नामक स्थायी भाव जाग्रत होता है, वही विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के संयोग से वीर रस में परिणत हो जाता है। इसका स्थायी भाव 'उत्साह' है।

#### Step 2: Example (उदाहरण):

बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,  
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

#### अथवा

#### करुण रस

#### Step 1: Definition (लक्षण):

किसी प्रिय व्यक्ति या वस्तु के विनाश या अनिष्ट की आशंका से हृदय में जो 'शोक' नामक स्थायी भाव

जाग्रत होता है, वही विभाव, अनुभाव और संचारी भावों से पुष्ट होकर करुण रस की निष्पत्ति करता है। इसका स्थायी भाव 'शोक' है।

**Step 2: Example (उदाहरण):**

मणि खोये भुजंग-सी जननी,  
फन-सा पटक रही थी शीश,  
अंधी आज बनाकर मुझको,  
किया न्याय तुमने जगदीश ?

**Quick Tip**

रस को पहचानने के लिए उसके स्थायी भाव को याद रखें। वीर रस का 'उत्साह' और करुण रस का 'शोक'। उदाहरण ऐसा चुनें जो आपको अच्छी तरह याद हो। To identify a 'Ras', remember its 'Sthayi Bhav' (permanent emotion). 'Utsah' (enthusiasm) for Veer Ras and 'Shok' (grief) for Karun Ras. Choose an example that you remember well.

**12. (ख) सन्देह' अलंकार अथवा 'यमक' अलंकार का लक्षण एवं उदाहरण लिखिए।**

**Solution:**

**सन्देह अलंकार**

**Step 1: Definition (लक्षण):**

जहाँ रूप, रंग या गुण की समानता के कारण किसी वस्तु को देखकर यह निश्चय न हो पाए कि यह वही वस्तु है, और दुविधा बनी रहे, वहाँ सन्देह अलंकार होता है। इसमें 'या', 'अथवा', 'कि', 'किधौं' जैसे वाचक शब्दों का प्रयोग होता है।

**Step 2: Example (उदाहरण):**

सारी बिच नारी है कि नारी बिच सारी है।  
सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है ॥

**अथवा**

**यमक अलंकार**

**Step 1: Definition (लक्षण):**

जब कोई शब्द या शब्द-समूह एक से अधिक बार आए और प्रत्येक बार उसका अर्थ भिन्न हो, तो वहाँ यमक अलंकार होता है।

**Step 2: Example (उदाहरण):**

कनक-कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।  
वा खाये बौराय जग, या पाये बौराय ॥

(यहाँ पहले 'कनक' का अर्थ धतूरा और दूसरे 'कनक' का अर्थ सोना है।)

### Quick Tip

सन्देह = दुविधा/निश्चय न हो पाना। यमक = एक शब्द, अनेक अर्थ। 'कनक-कनक' यमक का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण है। Sandeh = Doubt/indecisiveness. Yamak = One word, multiple meanings. The 'kanak-kanak' example is the most famous one for Yamak.

12. (ग) 'दोहा' छन्द अथवा 'चौपाई' छन्द का लक्षण एवं एक उदाहरण लिखिए।

**Solution:**

**दोहा छन्द**

**Step 1: Definition (लक्षण):**

यह एक अर्द्धसम मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं। इसके पहले और तीसरे (विषम) चरणों में 13-13 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे (सम) चरणों में 11-11 मात्राएँ होती हैं।

**Step 2: Example (उदाहरण):**

मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोय।  
जा तन की झाँई परे, स्याम हरित दुति होय ॥

**अथवा**

**चौपाई छन्द**

**Step 1: Definition (लक्षण):**

यह एक सम मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ होती हैं। चरण के अंत में जगण (ऽऽऽ) और तगण (ऽऽऽऽ) का प्रयोग नहीं होना चाहिए।

**Step 2: Example (उदाहरण):**

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा।  
सुरुचि सुबास सरस अनुरागा ॥  
अमिय मूरिमय चूरन चारू।  
समन सकल भव रुज परिवारू ॥

### Quick Tip

मात्राएँ याद रखें: दोहा = 13, 11, 13, 11। चौपाई = 16, 16, 16, 16। हनुमान चालीसा की अधिकांश पंक्तियाँ चौपाई हैं, जो याद रखने में सहायक हो सकती हैं। Remember the matras (syllabic counts): Doha = 13, 11, 13, 11. Chaupai = 16, 16, 16, 16. Most lines of the Hanuman Chalisa are Chaupais, which can be helpful to remember.

13. अपने क्षेत्र में हो रहे अवैध कब्जों की समस्या-समाधान हेतु जिलाधिकारी को शिकायती पत्र लिखिए।

**Solution:**

**विषय :** क्षेत्र में अवैध कब्जों की समस्या के समाधान हेतु शिकायती पत्र।

सेवा में,

जिलाधिकारी महोदय,

जिला अपने जिले का नाम,

शहर का नाम, पिन कोड।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं अपना नाम, अपने मोहल्ले/क्षेत्र का नाम का एक निवासी हूँ। मैं आपका ध्यान हमारे क्षेत्र में बढ़ती हुई अवैध कब्जों की गंभीर समस्या की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

हमारे क्षेत्र में, विशेषकर सार्वजनिक पार्कों, फुटपाथों और सरकारी भूमि पर कुछ प्रभावशाली लोगों द्वारा अवैध रूप से कब्जा कर लिया गया है। उन्होंने वहाँ अस्थायी या स्थायी निर्माण कर लिए हैं, जिससे आम जनता को भारी असुविधा हो रही है। बच्चों के खेलने के लिए पार्क नहीं बचे हैं और पैदल चलने वालों के लिए फुटपाथ पर जगह नहीं है। इससे यातायात भी प्रभावित होता है।

अतः, आपसे विनम्र अनुरोध है कि इस मामले की गंभीरता को देखते हुए शीघ्र-अतिशीघ्र सर्वेक्षण करवाकर अवैध कब्जों को हटवाने की कृपा करें, ताकि हम क्षेत्रवासी सुविधापूर्वक जीवनयापन कर सकें। आपकी इस कृपा के लिए हम आपके अत्यंत आभारी रहेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय,

अपना नाम

अपना पता

दिनांक : आज की तारीख

#### Quick Tip

औपचारिक पत्र में प्रारूप का ध्यान रखें: प्रेषक का पता (यदि आवश्यक हो), दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद और पता, विषय, संबोधन (महोदय), मुख्य विषय-वस्तु (समस्या और अनुरोध), समापन (भवदीय/प्रार्थी), और अपना नाम। भाषा विनम्र और स्पष्ट होनी चाहिए। In a formal letter, pay attention to the format: Sender's address (if necessary), Date, Recipient's designation and address, Subject, Salutation (Mahoday), Main body (problem and request), Closing (Bhavadiya/Prarthi), and your name. The language should be polite and clear.

13. (अथवा) बालिका छात्रावास में रहने वाली अपनी छोटी बहन प्रज्ञा को समय के महत्व को बताते हुए पत्र लिखिए।

**Solution:**

अपना पता  
शहर का नाम  
दिनांक : आज की तारीख  
प्रिय प्रज्ञा,  
सस्नेह आशीर्वाद।

आशा है तुम छात्रावास में स्वस्थ और प्रसन्न होगी। तुम्हारा पत्र मिला। यह जानकर बहुत खुशी हुई कि तुम वहाँ मन लगाकर पढ़ाई कर रही हो और नई सहेलियाँ भी बना ली हैं।

आज मैं तुम्हें विशेष रूप से समय के महत्व के बारे में कुछ बताना चाहता हूँ। प्रज्ञा, बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता। विद्यार्थी जीवन भविष्य की नींव होता है। इस समय का सदुपयोग तुम्हें जीवन में बहुत ऊँचाइयों तक ले जाएगा। इसलिए, अपनी एक दिनचर्या बनाओ और उसका दृढ़ता से पालन करो। पढ़ाई, खेल-कूद और मनोरंजन, सभी के लिए समय निर्धारित करो। जो व्यक्ति समय का सम्मान करता है, समय उसे सम्मान दिलाता है।

मुझे विश्वास है कि तुम मेरी बात को समझोगी और समय के हर पल का सदुपयोग करोगी। माताजी-पिताजी की ओर से भी तुम्हें बहुत स्नेह।

तुम्हारा भाई,  
अपना नाम

#### Quick Tip

अनौपचारिक पत्र में आत्मीयता का भाव होता है। प्रारूप में अपना पता, दिनांक, संबोधन (प्रिय...), अभिवादन, मुख्य संदेश और समापन (तुम्हारा भाई/बहन...) शामिल होता है। भाषा सरल और स्नेहपूर्ण रखें। An informal letter has a tone of intimacy. The format includes your address, date, salutation (Priya...), greeting, main message, and closing (Tumhara bhai/bahan...). Keep the language simple and affectionate.

14. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए :

(i) मोबाइल फोन : वरदान या अभिशाप (ii) राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020: शैक्षिक क्रान्ति का एक सार्थक प्रयास (iii) वरिष्ठ नागरिकों की समस्याएँ और समाधान (iv) नर हो, न निराश करो मन को।

#### Solution:

(i) मोबाइल फोन : वरदान या अभिशाप

**प्रस्तावना :** आज का युग विज्ञान का युग है और मोबाइल फोन विज्ञान का एक अद्भुत आविष्कार है। इसने संचार की दुनिया में क्रांति ला दी है और मानव जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। इसने जहाँ एक ओर हमें अनेक सुविधाएँ दी हैं, वहीं दूसरी ओर इसके कुछ दुष्प्रभाव भी हैं।

**मोबाइल फोन एक वरदान :** मोबाइल फोन एक वरदान है। इसके माध्यम से हम दुनिया के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति से तुरंत बात कर सकते हैं। स्मार्टफोन के आने से यह केवल बात करने का उपकरण नहीं रहा, बल्कि एक छोटा कंप्यूटर बन गया है। हम इंटरनेट, वीडियो कॉलिंग, ऑनलाइन शिक्षा, बैंकिंग, मनोरंजन और ज्ञान-विज्ञान की जानकारी अपनी उँगलियों पर प्राप्त कर सकते हैं। यह सुरक्षा की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है; संकट के समय तुरंत सहायता माँगी जा सकती है।

**मोबाइल फोन एक अभिशाप :** सिक्के के दूसरे पहलू की तरह, मोबाइल फोन के दुरुपयोग ने इसे एक अभिशाप भी बना दिया है। इसका अत्यधिक उपयोग, विशेषकर युवाओं में, एक लत बन गया है। लोग सामाजिक जीवन से कटकर वर्चुअल दुनिया में खो रहे हैं। इसके कारण आँखों पर, स्वास्थ्य पर और मानसिक स्थिति पर बुरा प्रभाव पड़ता है। साइबर-बुलिंग, ऑनलाइन धोखाधड़ी और अफवाहों का प्रसार जैसी समस्याएँ भी इसी से जुड़ी हैं।

**उपसंहार :** निष्कर्षतः, मोबाइल फोन स्वयं में न तो वरदान है और न ही अभिशाप। यह पूरी तरह से हमारे उपयोग पर निर्भर करता है। यदि हम इसका विवेकपूर्ण और संतुलित उपयोग करें, तो यह हमारे लिए एक शक्तिशाली वरदान है। हमें इसकी लत से बचना चाहिए और इसका उपयोग ज्ञान और विकास के लिए करना चाहिए।

#### Quick Tip

निबंध लिखते समय, उसे तीन भागों में विभाजित करें: प्रस्तावना (विषय का परिचय), मध्य भाग (विषय के पक्ष, विपक्ष, प्रकार, कारण, प्रभाव आदि का विस्तार), और उपसंहार (निष्कर्ष और संदेश)। अपने विचारों को व्यवस्थित करने के लिए रूपरेखा बनाना सहायक होता है।